RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 अक्टूबर 2020

बाल विज्ञान पत्रिका, अक्टूबर 2020

# चकमक

चिड़ियें
बहुत सोचती हैं
नए-नए घर
खोजती हैं।

वीरेन्द्र दुबे

मूल्य ₹50

# मिलिपीड का टशन

रोहन चक्रवर्ती

सौ पैर हैं तो क्या हुआ?
जल्दी का काम शैतान का
होता है क...क..किरण।

नाम में क्या रखा है जनाब हमें तो
सिर्फ काम से मतलब है: मिट्टी बनाना
और पोषक तत्व रीसाइकल करना।

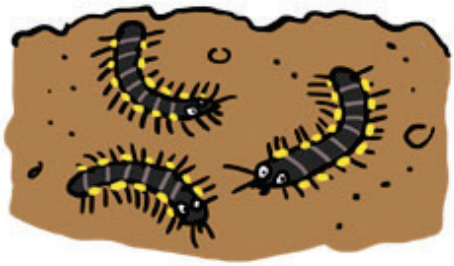

सिर्फ कलाकार होने से क्या होता
है बाबू मोशाय? कला की अपनी
ही पहचान हो तो बात है।('मिली'
कम्पोस्ट वर्मी कम्पोस्ट से बेहतर है!)

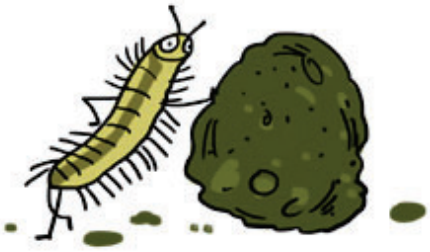

नए पैरों की कीमत तुम क्या
जानो रमेश बाबू? हर बदलाव
का नाम है ज़िन्दगी।

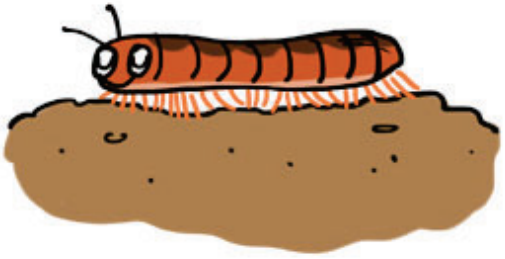

तुम्हारी सुरक्षा तुम्हारे ही हाथों
में है बसन्ती। जब गब्बर आए तो
अपना रक्षा कुण्डल बना लेना।

मैं अपनी फेवरेट हूँ।

अंक 409 • अक्टूबर 2020

# चकमक

## इस बार


चिड़ियें - वीरेन्द्र दुबे - 1
मिलिपीड का टशन - रोहन चक्रवर्ती - 2
दास्तान-ए-अनानास - शहनाज़ - 4
नज़रिया - रुबीना खान - 5
फीकल सैंक - नन्हे पंछियों... - जितेश शिल्के - 8
क्यों-क्यों - 10
टीके (वैक्सीन) किस तरह... - रिद्धि जोशी - 15
मास्क - सजिता नायर - 17
आबू-साबू - श्याम सुशील - 18
बर्डवॉचिंग - संकेत राउत और जिज्ञासा पटेल - 20
अमीबा भूलभुलैया में रास्ता ढूंढ सकते हैं - 24
तुम भी जानो - 25
बोरेवाला - जयश्री कलाथिल - 26
डिफरेंट टेल्स - 30
मेरा पन्ना - 32
माथापच्ची - 38
चित्रपहेली - 41
भूलभुलैया - 43
गई भैंस पानी में - मनोज साहू 'निडर' - 44


आवरण फोटो: दीपाली शुक्ला


**सम्पादन**
विनता विश्वनाथन

**सह सम्पादक**
कविता तिवारी
सजिता नायर
कनक शशि

**विज्ञान सलाहकार**
सुशील जोशी

**डिज़ाइन**
कनक शशि

**सलाहकार**
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

**सहयोग**
अभिषेक दूबे

**वितरण**
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

**एकलव्य**
एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

# दास्तान-ए-अनानास

शहनाज़

बचपन से ही मुझे ऐसे फल बहुत पसन्द हैं जिनके साथ पत्तियाँ भी लगी हों। जब भी मेरे पापा अमरूद लाते तो मैं वही अमरूद खाना पसन्द करती जिसके साथ पत्ती भी हो। हालाँकि अमरूद खाते समय पत्ती को हटाना ही पड़ता था। मगर पत्ती वाला अमरूद पाने की खुशी कुछ अलग ही होती थी। बड़े होने पर भी मेरा यह पत्ती प्रेम जस का तस रहा। फलों की पत्तियाँ मुझे खास तौर से लुभाती हैं। फल खरीदते वक्त मैं यही कोशिश करती हूँ कि पत्तियों वाले फल भी मिलें। हालाँकि बाज़ार में केवल कुछ ही फल पत्तियों के साथ मिलते हैं।

जिस एक फल की पत्ती मुझे खास तौर से लुभाती है, वो है अनानास। इसके ऊपर लगे नुकीले पत्ते देखकर ऐसा लगता है मानो किसी राजा ने मुकुट पहन रखा हो। वैसे तो बाज़ार में कटा हुआ अनानास भी मिलता है पर मैं समूचा अनानास ही खरीदना पसन्द करती हूँ। और यह सुनिश्चित करती हूँ कि उस पर पत्ते भी हों। हालाँकि पत्ते थोड़े सख्त होते हैं और उन्हें काटना थोड़ा मुश्किल होता है। मगर पत्ते वाले अनानास को हासिल करने के आगे ये तो कुछ भी नहीं।

कुछ दिन पहले की बात है। हुआ यूँ कि एक दिन मैंने एक फल वाले से एक समूचा अनानास खरीदा। उस पर पत्ते भी थे। मैं उनको देने के लिए अपने पर्स से पैसे निकालने लगी। तभी उन्होंने एक तेज़ छुरी निकाली और अनानास के पूरे पत्ते काट डाले। यह देखकर मैं उदास हो गई और मैंने कहा, "अरे! भैया ये क्या किया आपने? मुझे पत्ते भी चाहिए थे।" इस पर वो उन कटे हुए पत्तों को इकट्ठा करके मुझे देने लगे। मैंने बोला, "अरे! ऐसे नहीं। अनानास पर लगे हुए पत्ते चाहिए।"

मुझे पत्ते चाहिए यह बात उन्हें हज़म नहीं हुई। वो बोले, "अरे! पत्ते का क्या करेंगी? आखिर आप अनानास को खाएँगी तो काटकर ही।" मेरे लिए उनको ये समझाना मुश्किल था कि मुझे पत्ते क्यूँ चाहिए थे। मैं पहले तो उनसे बहस करने लगी कि अब ये वाला अनानास मुझे नहीं चाहिए। वो मुझे दूसरा अनानास दें जिस पर पत्ते भी हों। पर फिर तुरन्त ही मुझे लगा कि ऐसा करना बहुत नाइन्साफी होगी। हो सकता है दूसरे लोग ये कटा हुआ अनानास न खरीदें और उनका घाटा हो जाए। आखिरकार मैंने बुझे मन से बिना पत्तियों वाला वह अनानास खरीद लिया। और सोचा कि आगे से मैं अनानास खरीदने से पहले ही फल वाले से बता दूँगी कि मुझे पत्ते लगा हुआ अनानास चाहिए।

# नज़रिया

रुबीना खान

चित्र: कैरन हेडॉक

स्कूल में ज़ोरों-शोरों से सालाना जलसे की तैयारियाँ हो रही थीं। हर और रौनकें सजी थीं मानो कोई त्यौहार आने को है। मैं भी इस रौनक का हिस्सा बनी दमक रही थी। मैं गिद्दा (एक पंजाबी डांस) में भाग लेना चाहती थी। चटक रंगों के कपड़े पहने, मेकअप लगाए, लम्बे परान्दे में मैं खुद को सोचने लगी। अभी मैं खुद के और डांस के बारे में सोच ही रही थी कि मैम ने मेरा नाम आदिवासी डांस के लिए चुन लिया। जब मैंने उन्हें अपनी मर्ज़ी बतानी चाही, तो वे बोलीं, "तुम पर आदिवासी डांस जचेगा। तुम बहुत कुछ वैसी दिखती हो।" महज़ बारह साल की उम्र में मेरे लिए यह समझना मुश्किल था कि वह कहना क्या चाह रही थीं। मुझे लगा आदिवासी लोग और मैं एक जैसे ही नज़र आते होंगे।

"आदिवासी लोगों की अपनी अलग ही खूबसूरती होती है बाकियों की तरह" यह बात तब ना तो मैं समझ पा रही थी और ना ही मैम मुझे समझा पाईं। खैर, आखिरकार जलसे का दिन आ ही गया। हमें गहरे कत्थई रंग पर सुनहरी बॉर्डर वाली कॉटन की साड़ी पहनाई गई। उस पर दबे मेकअप के साथ ही सिक्कों से बने खूबसूरत गहनें हमने पहनें। खुशी के साथ हमने अपना ग्रुप डांस पूरा किया।

वक्त बीतता गया। स्कूल में हमारी विदाई (फेयरवेल) का दिन भी आ गया। घर पर मैं बार-बार आईने में खुद को देख रही थी। खुद को साड़ी पहने, मनमर्ज़ी से तैयार हुआ देख मुझे अच्छा लग रहा था। स्कूल पहुँचकर मैं और मेरी दोस्त स्कूल के हर कोने को देखते हुए अपनी यादें इकट्ठी कर रहे थे। उदासी थी सबसे दूर जाने की। बैचेनी भी थी कि आगे क्या होगा? बहरहाल हमारे इस दिन को खास बनाने में हमारे टीचर्स ने कोई कमी नहीं छोड़ी थी।

इस दौरान लोगों से मुझे अलग तरह की तारीफें भी सुनने को मिलतीं। वे कहते, "नैन नक्श अच्छे हैं, ऊपर वाला थोड़ा रंग और दे देता तो बढ़िया होता।"

हमारे लिए कुछ कार्ड्स तैयार किए गए थे। उन कार्ड्स में हमारे व्यवहार और रूप-रंग को ध्यान में रखकर कुछ पंक्तियाँ लिखी गई थीं। उन पंक्तियों को सुनकर हमें पहचानना था कि यह किसके लिए लिखी गई हैं। सभी अपने से जुड़ी पंक्तियाँ बखूबी पहचान रहे थे। मुझसे इन्तज़ार नहीं हो रहा था कि मेरे लिए क्या खास लिखा गया है। खैर, मेरा इन्तज़ार खतम हुआ। "सूरत से सीरत बड़ी, बिन पंख लगे उड़ जाऊँ, सूरत गई तो जाने दो सीरत कभी ना जाए।" इसे सुनकर बाकी लोग मेरी तरफ देखने लगे। मेरे चेहरे पर खुशी की जगह उदासी छा गई। सुबह से दिखने वाली अपनी खूबसूरती मुझे खतम होती नज़र आने लगी। स्कूल का आखिरी दिन मुझे मायूस कर गया।

यह कोई एक-दो बार की बात नहीं। और यह बात सिर्फ स्कूल तक ही सीमित नहीं रही। कई मर्तबा दोस्त, परिवार, रिश्तेदार और कई अन्य लोगों ने भी इस तरह की बातें मुझे कहीं। वे किसी भी तरह की काले रंग की चीज़ों

के साथ मेरा नाम जोड़ते। इसका असर यह हुआ कि मेरी ज़िन्दगी से आहिस्ते-आहिस्ते गहरे रंग उड़ने लगे। मेरे कबर्ड में सिर्फ हल्के रंग के कपड़े होते क्योंकि परिवार के लोग मेरे लिए वही चुनते। कभी-कभी तो दुकानदार भी गहरे रंग के कपड़े देखने ही नहीं देते। कहते, "आप पर सफेद, गुलाबी या हल्के रंग अच्छे लगेंगे। चेहरा खिला दिखेगा।"

छोटी उम्र में से ही मैंने जूते और पूरी तरह पैर ढँक देने वाली चप्पलें पहनना शुरू कर दिया। मेकअप से भी मैं दूर ही रही। उसकी जगह सिर्फ पाउडर ने ले ली। लोग तरह-तरह के घरेलू नुस्खे, क्रीम, फेसपैक बताते जिससे रंग निखर जाए। ऐसा लगता जैसे मुझे छोड़कर सारी दुनिया को मेरे रंग की फिक्र हो रही थी। मुझे उनकी नज़र से सुन्दर बनाने की ज़िम्मेदारी उन सब पर आ गई थी।

इस दौरान लोगों से मुझे अलग तरह की तारीफें भी सुनने को मिलतीं। वे कहते, "नैन नक्श अच्छे हैं, ऊपर वाला थोड़ा रंग और दे देता तो बढ़िया होता।" एक और बात मुझे सीखने को मिली कि अगर आप सुन्दर नहीं हैं, तो आपको अपना व्यवहार और हुनर तराशने होंगे। इससे फर्क इतना ही होता कि लोग कह पाते सूरत जैसी भी हो सीरत अच्छी है। लेकिन तब भी कहीं न कहीं प्राथमिकता में चेहरा ही होता।

कुछ लोग तरह-तरह के मज़ाक करते। कहते, "रात में मत जाओ, कोई डर जाएगा।" "दूर से तो दिखाई नहीं देतीं, अँधेरा कर देती हो।" परिवार में नए बच्चे के जन्म पर सबको यही फिक्र होती कि कहीं उसका रंग मेरे रंग पर ना चला जाए। इस तरह की बातें मुझे अन्दर से तोड़ देतीं। मेरा खुद पर यकीन कम होने लगा। समझ नहीं आता था कि मेरे सांवले रंग को अपनाना लोगों के लिए इतना मुश्किल क्यों है।

अब तक तो मेरे अन्दर से भी खुद के लिए प्यार कम हो गया था। फोटो खिंचाना, साफ रंगत के लोगों के बीच जाना मुझमें झिझक पैदा करने लगा। ज़्यादातर वक्त मैं यही सोचती कि अगर खुद में कुछ बदल पाती तो बेशक अपनी रंगत बदल लेती। कई बार अकेले में खुद से सवाल करती कि क्या सच में यह मेरी कमी है जिसकी वजह से मैं किसी को पसन्द नहीं।

एक दिन यही सब सोचते हुए मेरी नज़र आईने पर गई। लम्बे वक्त बात खुद को ठीक से देखा। उस वक्त यही बात ज़ेहन में आई कि इस चेहरे को मैं खुद भी कहाँ पसन्द कर पाई तो फिर औरों से कैसे उम्मीद करूँ। बचपन में खुद को पसन्द करती थी। पर पता नहीं कैसे औरों की बातें मुझ पर इतनी हावी हो गईं कि मुझे खुद से दूर ले गईं। अगले दिन जब काम पर गई तब बहन की काले रंग की ड्रेस पहनकर गई। थोड़ी झिझक थी मुझ में तो लोगों की नज़रों में भी अटपटाहट थी। पर ये भी है कि मैंने औरों की नज़रों को ये आदत ही नहीं डाली थी कि वे मुझे ऐसे देख सकें।

अपनी दुनिया में वापिस लौटने में मेरे दो खास दोस्तों ने मेरा हमेशा साथ दिया। उन्होंने मुझे एहसास कराया कि "मैं खास हूँ।" आगे आना, मन मुताबिक तैयार हो पाना मैंने उन्हीं के साथ रहते हुए किया। इस सब में लम्बा वक्त लगा। लेकिन मैं आगे बढ़ पाई क्योंकि मेरी लड़ाई अपने आप से थी। यहाँ बात रंग की हो रही है, लेकिन हमारे नैन-नक्श, कद, वज़न आदि तमाम चीज़ें हैं जिन्हें लोग कम करके आँकते हैं। पर हमें समझना होगा कि कमी उनकी सोच, उनके नज़रिए में है।

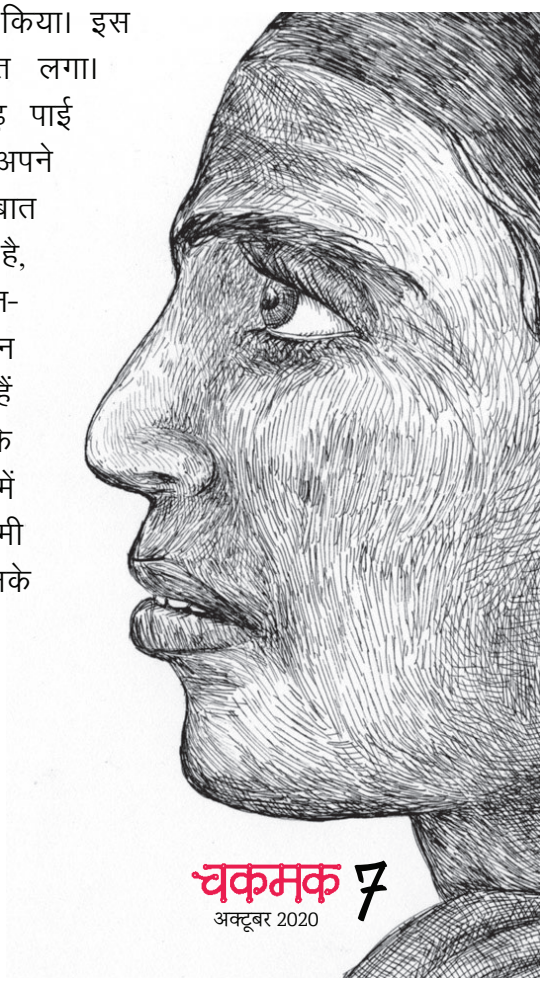

अपने बच्चे को खाना खिलाती शकरखोरा

# फीकल सैक

## नन्हे पक्षियों के डाइपर

जितेश शिल्के

नर शकरखोरा (बाएँ)  मादा शकरखोरा(दाएँ)

मई महीने की बात है। गर्मी अपने चरम पर थी। तभी हमारे घर में कुछ नए मेहमान आए। ये मेहमान और कोई नहीं बल्कि शकरखोरा (सनबर्ड) पक्षियों का एक जोड़ा था। वे सिर्फ हमें हैलो कहने नहीं आए थे, बल्कि उन्होंने अपना घोंसला बनाने के लिए हमारे घर का एक हिस्सा चुना था। और यह हमारी खुशकिस्मती थी कि हमें उनके सुन्दर चूज़ों को बड़ा होते हुए देखने का मौका मिला। हमारे लिए यह अपने सोफे पर बैठकर नेशनल जियोग्राफिक पर दिखाए जाने वाले किसी कार्यक्रम को लाइव देखने जैसा था।

सनबर्ड आम तौर पर हमारे आसपास दिख जाते हैं। ये 10 सेंटीमीटर से भी छोटे होते हैं। ये हमेशा से मुझे हैरत में डालते आए हैं। फिर बात चाहे इनके छोटे आकार की हो या इनकी घुमावदार सुई के आकार की चोंच की। सिर्फ यही नहीं प्रजनन के मौसम में नर शकरखोरे का अपने पंखों को गहरे बैंगनी रंग में बदलना, और अपने सिर, आवरण व छाती को मेटालिक बैंगन से हरे-नीले रंग में बदलना भी कुछ कम हैरतअंगेज़ नहीं होता। इन्हें देखना मेरे लिए हमेशा खुशनुमा होता है।

जैसे सभी माँ-बाप जन्म के बाद से ही अपने बच्चों को बड़ा करने में लग जाते हैं, वैसे ही यह जोड़ा भी अपने अण्डों की देखभाल में लगा था। अण्डे सेने और उनसे बच्चे निकलने में लगभग 15-16 दिनों का समय लगा। फिर अण्डों से दो खूबसूरत बच्चे निकले और घोंसले के छोटे-से झरोखे से झाँकने लगे। अब जोड़े का ध्यान कीड़ों (खास तौर से मकड़ियों) को पकड़ने पर ज़्यादा था जिन्हें वे बच्चों को खिला सकें। यह काफी दिलचस्प है कि वयस्क सनबर्ड मुख्यत: फूलों का मकरन्द (कभी-कभी कीड़े) खाते हैं, जबकि उनके नन्हे बच्चे मुख्यत: कीड़े खाते हैं।

एक दिन जब मैं रोज़ की तरह सनबर्ड और उनके बच्चों के बर्ताव को देख रहा था एक अनोखी बात ने मेरा ध्यान खींचा। एक दौर का खाना

खिलाने के बाद सनबर्ड एक पल के लिए अपने घोंसले पर लटक जाते। फिर बच्चे उनकी ओर पीठ करके अपनी छोटी-सी पूँछ को थोड़ा-सा ऊपर उठाते और सफेद थैली जैसी कुछ चीज़ निकालते। सनबर्ड उसे अपनी चोंच में पकड़कर बाहर की ओर उड़ जाते। ये क्या है, मैं सोचने लगा। थोड़ी खोजबीन करने पर मुझे मल की थैली (फीकल सैक) के बारे में पता चला।

सभी नए पैदा हुए बच्चों की तरह पक्षियों के नन्हे बच्चे भी काफी ज़्यादा मल त्याग करते हैं। लेकिन अगर तुम इनके घोंसलों के अन्दर देखो तो तुम्हें इस बात का कोई सबूत नहीं मिलेगा। ऐसा लगता है जैसे मल कहीं गायब हो गया हो। तो सवाल यह है कि मल आखिर जाता कहाँ है। भला हो इस थैली का जो किसी डाइपर की तरह काम करती है। यह थैली अपने आप में पूर्ण एक ऐसी संरचना होती है जो पक्षियों को मल को आसानी से उठाने और अपने घोंसले को साफ रखने की सहूलियत देती है। यह मल से छुटकारा पाने का एक तरीका है। नहीं तो इससे घोंसले में बदबू आ सकती है और ये वहीं विघटित हो सकता है। इबानेज़ अलैमो नाम के एक वैज्ञानिक ने इस बारे में शोध किया है। उनके शोध के अनुसार यह थैली मल में पाए जा सकने वाले खतरनाक बैक्टीरिया या सूक्ष्मजीवों को अलग रखने में भी मदद करती है। नहीं तो इसका असर माता-पिता या बच्चों पर हो सकता है।

इबानेज़ कहते हैं कि कुछ पक्षियों ने फीकल सैक से निपटने का एक कारगर तरीका विकसित किया है। वे इसे निगल जाते हैं। अधिकांश शोधों के आधार पर जो सबसे बेहतर अनुमान मिला है वो ये है कि पक्षी इसे इसलिए खाते हैं क्योंकि यह पोषण से भरपूर होता है। नन्हे बच्चे अपने खाने को पूरी तरह पचा नहीं पाते इसलिए इन सैक में भी पोषक तत्व व ऊर्जा बची होती है। शोधों की कमी के बावजूद सबूत यह दिखाते हैं कि फीकल सैक कई तरह से उपयोगी है। तो अगली बार जब तुम किसी पक्षी का निरीक्षण करो तो इस मल वाली बात पर खास तौर से गौर करना।

अनुवाद: कविता तिवारी

मल थैली (फीकल सैक) को हटाती शकरखोरा

बच्चों से फीकल सैक निकालते हुए पक्षी

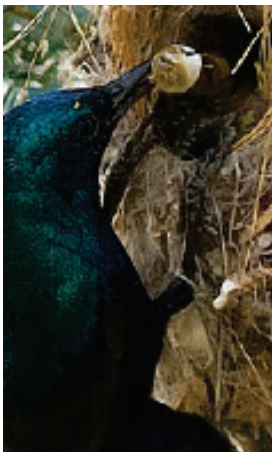

# क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—
"पिछले कुछ महीनों से स्कूल बन्द हैं। इस दौरान तुमने स्कूल की किस बात को सबसे ज़्यादा मिस किया, और किस बात को बिलकुल भी मिस नहीं किया? "

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगली बार के लिए सवाल है —
सोचो कि तुम बड़े बन गए और तुम्हारे बड़े, बच्चे बन गए। तो तुम उनसे क्या कहना चाहोगे...

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

**मैं** अपने स्कूल के बाहर बिकने वाले समोसों को बहुत मिस करती हूँ। क्योंकि वो गरमा-गरम समोसे बहुत टेस्टी लगते थे। और मैं गरमी के दिनों में होने वाली असेम्बली को बिलकुल भी नहीं मिस करती हूँ क्योंकि उतनी देर तक बाहर धूप में खड़े रहने के बाद हालत खराब हो जाती थी।

अनीका मिश्रा, डीएवी पब्लिक स्कूल, बेगूसराय, बिहार

**मैं** दोस्तों के साथ कॉरीडर में खेलना और डैक्स के नीचे झुककर उनसे बातें करना बहुत मिस करता हूँ। और मैं बड़ी क्लास के बच्चों का मेरा मज़ाक उड़ाना बिलकुल मिस नहीं करता।

अंशु, सातवीं, मंज़िल संस्था, दिल्ली

चित्र: सृष्टि, पाँचवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

**मैं** अपनी क्लास, अपने टीचर, अपने दोस्तों के साथ खेलना, खाना खाना व एक साथ घूमना और टीचर्स के साथ गतिविधियाँ करना बहुत मिस करता हूँ। ऑनलाइन क्लास में सब कुछ होता है मगर उतना मज़ा नहीं आता जितना स्कूल जाने पे आता था।

भावेश चौधरी, तीसरी, शिव नाडार स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

चित्र: दिविशा, पहली ए, बिलाबोंग हाई स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

**स्कूल** में हम सब मिलकर साथ में खेल खेलना, पढ़ाई करना, भोजन करने जैसे काम करते थे। इन सब कामों में शिक्षक भी हमारे साथ होते थे। बड़ा मज़ा आता था। पर अब तो हम एक-दूसरे से मिल भी नहीं पा रहे हैं। अब हम ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे हैं। लेकिन जितना मज़ा स्कूल में पढ़ाई करने पर आता था, उतना ऑनलाइन पढ़ाई में नहीं आता है। स्कूल कब खुलेंगे इस बात का मैं इन्तज़ार कर रहा हूँ।

मयंक मिश्रा, छठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, गोंदई, बण्डा, सागर, मध्य प्रदेश

**मुझे** अपने स्कूल की बहुत याद आती है। लेकिन सबसे ज़्यादा याद मुझे आखिरी पीरियड की आती है जिसमें मैम हमें 'टॉम एण्ड जैरी' दिखाती थीं। उसे देखकर मैं और मेरी सहेलियाँ बहुत हँसती थीं। पूरे दिन की वह सबसे अच्छी क्लास होती थी। एक चीज़ जो मैं बिलकुल मिस नहीं कर मुझे अपने दोस्तों के साथ झगड़ना पड़ता था प्लेग्राउंड में पहले पहुँचने के लिए या फिर पहले झूला झूलने के लिए। हम सभी झगड़ा कर लेते थे और फिर कुछ दिनों तक बात नहीं करते थे। मुझे मेरे दोस्तों से झगड़ना पसन्द नहीं। झगड़े तो होते ही हैं लेकिन मैं स्कूल को बहुत मिस करती हूँ।

नायषा अग्रवाल, पहली ई, डीपीएस वाराणासी, उत्तर प्रदेश

**मैंने** सबसे ज़्यादा अपने टीचर और दोस्तों को मिस किया। टीचरों के साथ पढ़ना-लिखना और अपने दोस्तों के साथ पढ़ना मैं याद करता हूँ। अपने दुश्मनों को भी याद करता हूँ। जो मैं याद नहीं करता वो है मैदान की गन्दगी। जब बारिश होती है तब वहाँ पास में बदबू और गन्दगी हो जाती है। वह पसन्द नहीं आता।

शिवशंकर, पाँचवीं (लॉकडाउन के पहले), शहीद स्कूल, बीरगाँव, छत्तीसगढ़

चित्र: हिमांशी साहू, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

**कोई** भी बच्चा चाहे स्कूल से कितन ही नफरत क्यों ना करे पर एक वजह ऐसी है जिससे स्कूल जाने की उत्सुकता बनी रहती है। वो है स्कूल के हमारे दोस्त। मुझे कभी-कभी जब स्कूल जाने का मन नहीं करता था तो मैं अपने फ्रैंड्स के साथ बनाए गए प्लान को याद करके झट-से रैडी हो जाती थी। लेकिन पिछले छह-सात महीनों से मैं अपनी एक भी सहेली से नहीं मिली। इसलिए मैं सबसे ज़्यादा अपने दोस्तों को मिस कर रही हूँ। रोज़ बस में बैठते ही दोस्तों के साथ गेम्स खेलना, एक चॉकलेट का आठ-दस टुकड़ों में बाँटकर खाना, वापिस लौटते समय पूरे दिन की बातें अपने दोस्तों को बताना यह सब मुझे बहुत याद आता है। स्कूल में होने वाले कॉम्पिटीशन, गेम्स आदि को भी मैं बहुत मिस करती हूँ।

वंशिका सराफ़, आठवीं, जीजस एंड मैरी स्कूल, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

**मैं** स्कूल के खेल के मैदान को सबसे ज़्यादा मिस कर रहा हूँ। क्योंकि वहाँ मैं अपने दोस्तों के साथ पढ़ाई करता और छुट्टी होने पर खूब मज़े से झूला झूलता और क्रिकेट खेलता था। हमारे खेल के अध्यापक बहुत अच्छे-से खेल सिखाते हैं। इस समय मैं अपने अध्यापकों और पढ़ाई को बिलकुल नहीं मिस कर रहा हूँ क्योंकि वे हमें ऑनलाइन पढ़ाई करवा रहे हैं।

मोहित रामरायका, पाँचवीं, द पिलर्स पब्लिक स्कूल, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

**मुझे** मेरे दोस्तों के साथ खेलना बहुत याद आता है। उनके साथ बैठना और पढ़ना भी याद आता है। जो मुझे बिलकुल याद नहीं आता वो है सुबह जल्दी उठकर तैयार होना। और मैं स्कूल के खाने को भी मिस नहीं करती।

कोहाना, तीसरी, द हेरिटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

**मुझे** अपने दोस्तों को खेल-खेल में परेशान करना याद आता है। मुझे दोस्तों के साथ खाना खाने और खेलने की याद भी आती है। मुझे पढ़ाई बिलकुल याद नहीं आती।

अंश, चौथी, एसडीएमसी स्कूल, हौज खौस, दिल्ली

**मैं** पढ़ाई को मिस करता हूँ। मैं स्कूल की छुट्टी मिस नहीं करता। क्योंकि मुझे स्कूल अच्छा लगता है। घर जाना अच्छा नहीं लगता। मुझे स्कूल बहुत पसन्द है।

मोहम्मद असद, पहली, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: तनु, पाँचवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

वो स्कूल के दिन
वो दोस्ताना
जब जाते थे
संग एक-दूसरे को मारकर ताना

वो स्कूल के दिन
वो दोस्ताना
जिस दोस्त के लिए
लेकर जाते थे, अचार करके बहाना

वो स्कूल के दिन
वो दोस्ताना
जब सीढ़ियों से जाते हुए
सूँघकर बताते थे क्या बन रहा है खाना

वो स्कूल के दिन
वो दोस्ताना
जब करते थे एक-दूसरे से झगड़े
फिर कुछ देर बाद
उसी के संग हो जाना

दिया रॉय, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, उत्तराखण्ड

स्कूल की बहुत-सी बातें मिस करती हूँ। सबसे ज़्यादा मैं इस बात को मिस करती हूँ कि जब हमारे शिक्षक हमें पढ़ाते-पढ़ाते अपनी बचपन पर पहुँच जाते थे और अपनी किसी शरारत या कोई घटना के बारे में बताते थे तो बहुत मज़ा आता था। और इस दौरान पढ़ने में भी मज़ा आता था। और एक बात जो मैं मिस नहीं करती हूँ वो यह है कि जब मेरी लड़ाई मेरे दोस्तों से हो जाती थी तो वे मुझे आँखें नीची करके देखते थे। और जब मैं उन्हें देखी थी तो ऐसे मुँह घुमा लिया करते थे मानो वह मुझे देख ही नहीं रहे थे।

नीति झा, किलकारी बाल भवन, पटना, बिहार

मैंने सबसे ज़्यादा मिस किया अपने टीचर को, दोस्तों को। टीचरों का हँसना-रुलाना, अपने दोस्तों के साथ आते-जाते मस्ती करना और स्कूल में छुप-छुपकर लंच करना। लंच करने बैठते तो सब लोग बैठ जाते थे। जो हमारे प्रिंसिपल हैं वो आते तो विज्ञान पढ़ाते और पहाड़ा पूछते थे। मैंने जो याद नहीं किया ऐसा कोई नहीं है। मैंने स्कूल में सारे क्लास के बच्चों की याद की। और तो और मैंने अपने दुश्मनों को भी याद किया। जो मुझे पसन्द नहीं है वो स्कूल की गली बहुत छोटी है और स्कूल के पीछे वाली गन्दगी। बस, और कुछ नहीं।

सेवति, आठवीं, बापू जी विद्या मन्दिर, बीरगाँव, छत्तीसगढ़

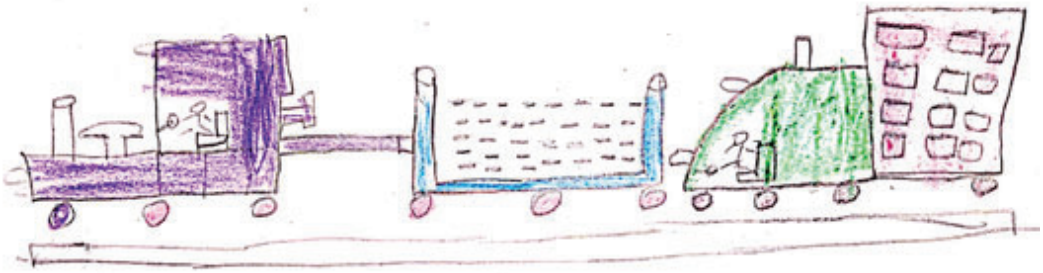

जब मैं स्कूल जाती थी तो अपने दोस्तों और टीचर्स को मिल पाती थी। उनसे बातें करके मुझे अच्छा लगता था। अपने स्कूल के ब्लैकबोर्ड को मिस करती हूँ जिस पर लिखकर हमारे टीचर्स हमें पढ़ाते थे। पर मैं अपनी कक्षा का खाना मिस नहीं करती हूँ क्योंकि मेरी मम्मी मेरे लिए नए-नए तरह के पकवान बनाती हैं।

त्विशा कौर, तीसरी डी, बिलाबोंग हाई स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

चित्र: हिमांशु, तीसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

# टीके (वैक्सीन) किस तरह काम करते हैं?

रिद्धि जोशी, बारहवीं, फ्रीमॉंट, कैलिफॉर्निया
अनुवाद: सुशील जोशी

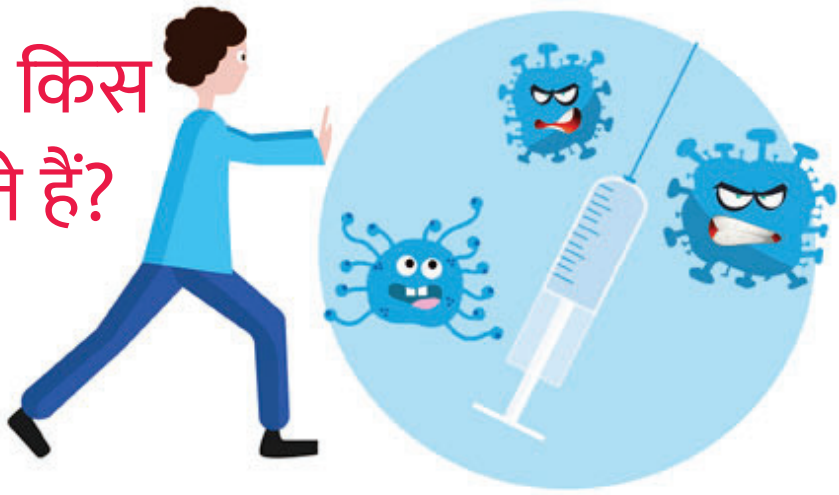

प्रतिरक्षा तंत्र हमारे शरीर में बीमारियों के खिलाफ सुरक्षा की व्यवस्था है। यह तंत्र अंगों, कोशिकाओं और प्रोटीन्स से मिलकर बना है जो साथ-साथ काम करते हैं और शरीर में बाहर से आने वाले घुसपैठियों पर नज़र रखते हैं, उन्हें नष्ट करते हैं। इन घुसपैठियों को रोगजनक (पैथोजेन) कहते हैं। इनमें बैक्टीरिया और वायरस शामिल हैं।

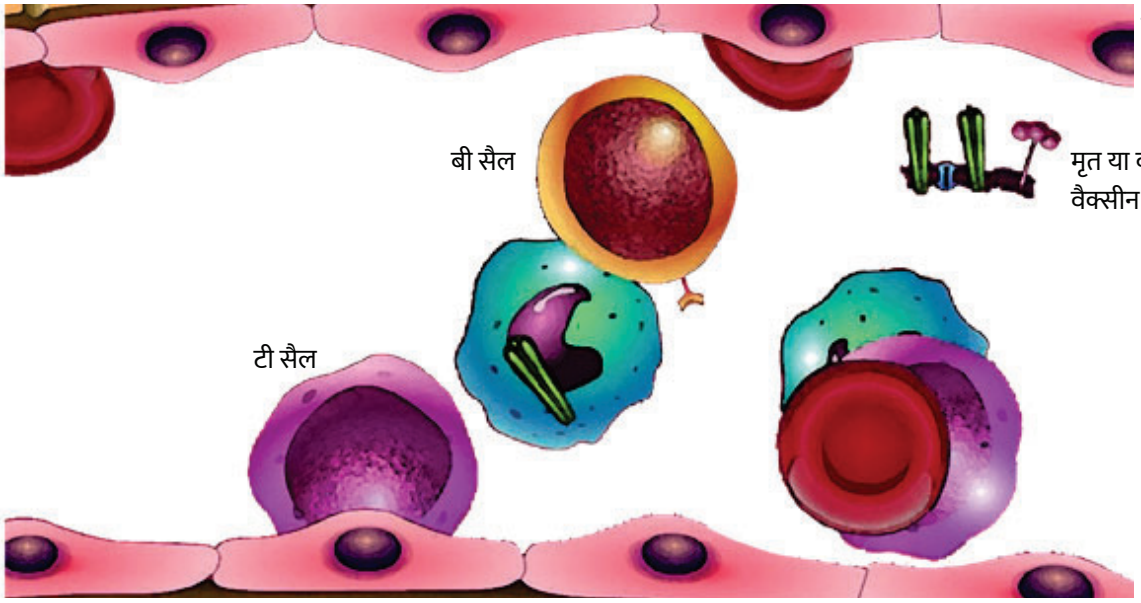


चित्र 1

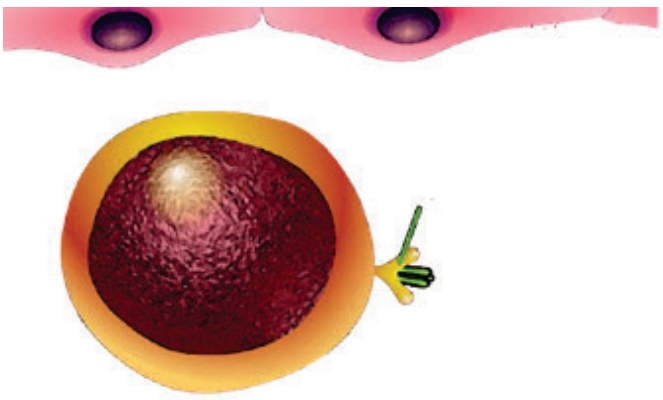

चित्र 2 - बी सैल वायरस को अन्दर लेती हैं और पहचानने का काम करती हैं

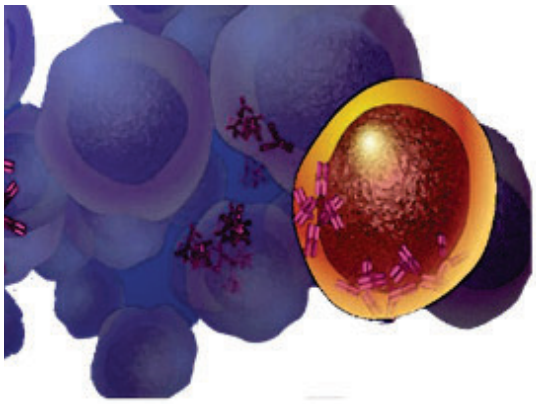

चित्र 3 - बी सैल एंटीबॉडी बनाते हैं

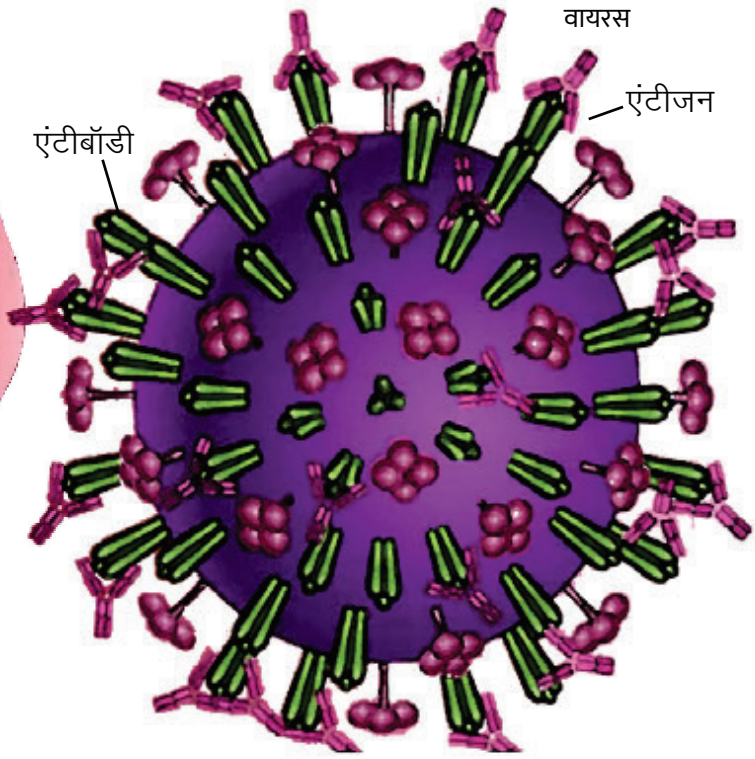


चित्र 4 - जब शरीर में ज़िन्दा वायरस द्वारा संक्रमण होता है ये एंटीबॉडी उनकी सतह पर एंटिजन को पहचानकर उनसे जुड़ जाते हैं और उन्हें आगे बढ़ने से रोक देते हैं।

जब शरीर में ऐसा कोई रोगजनक प्रवेश करता है तो प्रतिरक्षा तंत्र सक्रिय हो जाता है। उसका सबसे पहला काम होता है ऐसे रोगजनक की बाहरी सतह पर मौजूद प्रोटीन को पहचानना। इन प्रोटीन पहचान चिन्हों को एंटीजन कहते हैं। एंटीजन को पहचानने का काम प्रतिरक्षा तंत्र की बी-कोशिकाएँ करती हैं (चित्र - 2)। जैसे ही बी-कोशिका एंटीजन को पहचानती हैं, वे उसके विरुद्ध एंटीबॉडी बनाना शुरू कर देती हैं (चित्र - 3) और साथ ही खुद की संख्या भी बढ़ाने लगती हैं। एंटीबॉडी प्रोटीन होते हैं और बैक्टीरिया या वायरस को नष्ट करने अथवा कमज़ोर करने का काम करते हैं। एंटीबॉडी किसी खास एंटीजन के लिए होती है। जैसे फ्लू के लिए बनी एंटीबॉडी और चेचक के लिए बनी एंटीबॉडी एकदम अलग-अलग होती हैं।

एंटीबॉडी बाहरी बैक्टीरिया या वायरस के एंटीजन से जुड़ जाती हैं (चित्र - 4)और उसे आगे बढ़ने से रोक देती हैं। इसके साथ ही वे एक काम और करती हैं। वे प्रतिरक्षा तंत्र के अगले चक्र को शुरू करवाती हैं। यानी अब टी-कोशिका रोगजनक के खिलाफ लड़ाई का अगला मोर्चा सँभाल लेती हैं।

कभी-कभी शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र इतना शक्तिशाली नहीं होता कि वह हमें किसी नई बीमारी से बचा सके, हमें गम्भीर रूप से बीमार होने से या मृत्यु से सुरक्षित रख सके। पूरे इतिहास में लोग चेचक, मलेरिया, फ्लू जैसे रोगों से खौफ खाते रहे हैं क्योंकि इनके एंटीजन के खिलाफ प्रतिरक्षा कमज़ोर होती है।

यदि किसी प्रकार से शरीर को उस रोगजनक से सम्पर्क करवाकर पहले ही ऐसे एंटीजन से परिचित करा दिया जाए, तो प्रतिरक्षा तंत्र की क्षमता बढ़ाई जा सकती है और लाखों लोगों को इन बीमारियों से बचाया जा सकता है। टीके यही करते हैं।

टीकों का निर्माण रोगजनक के मृत अथवा कमज़ोर पड़ चुके रूप से किया जाता है। इन्हें शरीर में इंजेक्ट करते हैं (चित्र 1)। चूँकि रोगजनक मृत या कमज़ोर है, इसलिए वह शरीर में अपनी संख्या तो नहीं बढ़ा सकता। तो वह किसी व्यक्ति को बीमार तो नहीं कर पाता। लेकिन प्रतिरक्षा तंत्र को तो मालूम नहीं होता कि रोगजनक मृत या कमज़ोर है। वह उसके खिलाफ वैसे ही काम करता है जैसा वह वास्तविक रोगजनक के खिलाफ करता – यानी वह एंटीजन को पहचानकर (चित्र 2) उसके खिलाफ एंटीबॉडी बनाता है (चित्र 3), उसे नष्ट करता है। जब प्रतिरक्षा तंत्र उस रोगजनक के खिलाफ विशिष्ट एंटीबॉडी बनाता है, तो उसे वह एंटीजन और उसे नष्ट करने का तरीका याद रहता है। अगली बार जब वही रोगजनक शरीर में आता है तो प्रतिरक्षा तंत्र ज़्यादा शक्तिशाली और ज़्यादा तेज़ी-से कार्रवाई कर पाता है क्योंकि टीके के माध्यम से वह उसे पहचान चुका है।

आजकल घर के बाहर कहीं भी जाना हो तो मास्क पहनना ज़रूरी होता है। पहले पहल मास्क की थोड़ी मारामारी थी, पर अब तो लगभग सभी जगह मास्क उपलब्ध हैं। बल्कि अब मास्क की बिक्री इतनी ज़्यादा हो गई है कि कुछ-कुछ दुकानों पर सिर्फ मास्क ही बिकने लगे हैं। मेडिकल मास्क से लेकर कपड़ों वाले मास्क तक – ना जाने मास्क के कितने अलग-अलग रूप बाज़ार में आ गए हैं। अब तो टेलर को कपड़ा सिलवाने दो तो वे भी मैचिंग का मास्क बनवाने के लिए पूछने लगे हैं। हाल ही मैंने कहीं ये भी पढ़ा था कि बाज़ार में इन दिनों मधुबनी पेंटिंग वाले मास्क की बहुत माँग है।

तो अब जब मास्क हमारी ज़िन्दगी का इतना ज़रूरी हिस्सा बन गया है, हमने सोचा क्यों न हम भी इन मास्क को अलग-अलग तरह से सजाएँ। इसके लिए ज़्यादा मेहनत नहीं लगती। अगर तुम्हारे पास अलग-अलग रंग-बिरंगे कपड़े हों तो उनको आपस में मास्क के आकार में सीकर मास्क के ऊपर से लगा सकते हो। इस तरह तुम्हारा मास्क दो परतों वाला हो जाएगा। अगर तुम्हें कढ़ाई करना (एम्ब्रॉइडरी) आता हो तो तुम रंगीन धागों से मास्क पर अपना नाम लिख सकते हो या कुछ और डिज़ाइन भी बना सकते हो। पेंटिंग करना पसन्द हो तो मास्क पर पेंटिंग भी कर सकते हो। बटन, मोती या लेस लगाकर भी मास्क को सजा सकते हो। यानी कई-कई तरीके हैं मास्क को सजाने के। तो तुमने अपना मास्क कैसे सजाया, हमें ज़रूर बताना।

# मास्क

सजिता नायर

# लहराती अकॉर्डियन किताबें!!

शुरुआती पढ़ना सीख रहे बच्चों को किसी किताब के केवल चित्र और शब्द ही नहीं बल्कि उसका स्वरुप भी प्रभावित करता है। आबू-साबू एकलव्य की ऐसी ही अनूठी अकॉर्डियन किताब है।

अकॉर्डियन किताब के एक-एक फोल्ड को जब हम खोलते जाते हैं तो पूरा दृश्य उभरता है। इतना ही नहीं, इन किताबों को खड़ा किया जा सकता है, खोलकर टाँगा जा सकता है। हर बच्चा अपनी इच्छा से इसे देख या पढ़ सकता है। एकलव्य ने ऐसी दस किताबें प्रकाशित की हैं।

इन किताबों को तुम पिटारा कार्ट से मंगवा सकते हैं। http://www.pitarakart.in

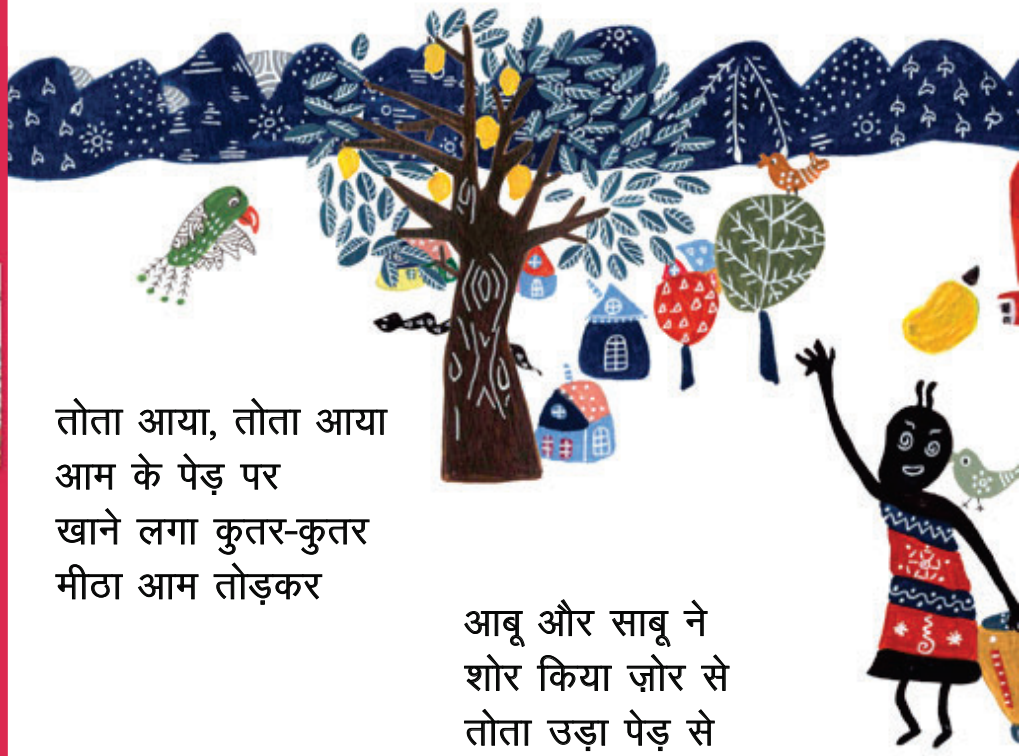

तोता आया, तोता आया
आम के पेड़ पर
खाने लगा कुतर-कुतर
मीठा आम तोड़कर

आबू और साबू ने
शोर किया ज़ोर से
तोता उड़ा पेड़ से
मीठा आम छोड़ के

छिड़ गई लड़ाई
आपस में भाई
आम छूटा हाथ से
कौआ उड़ा पास से

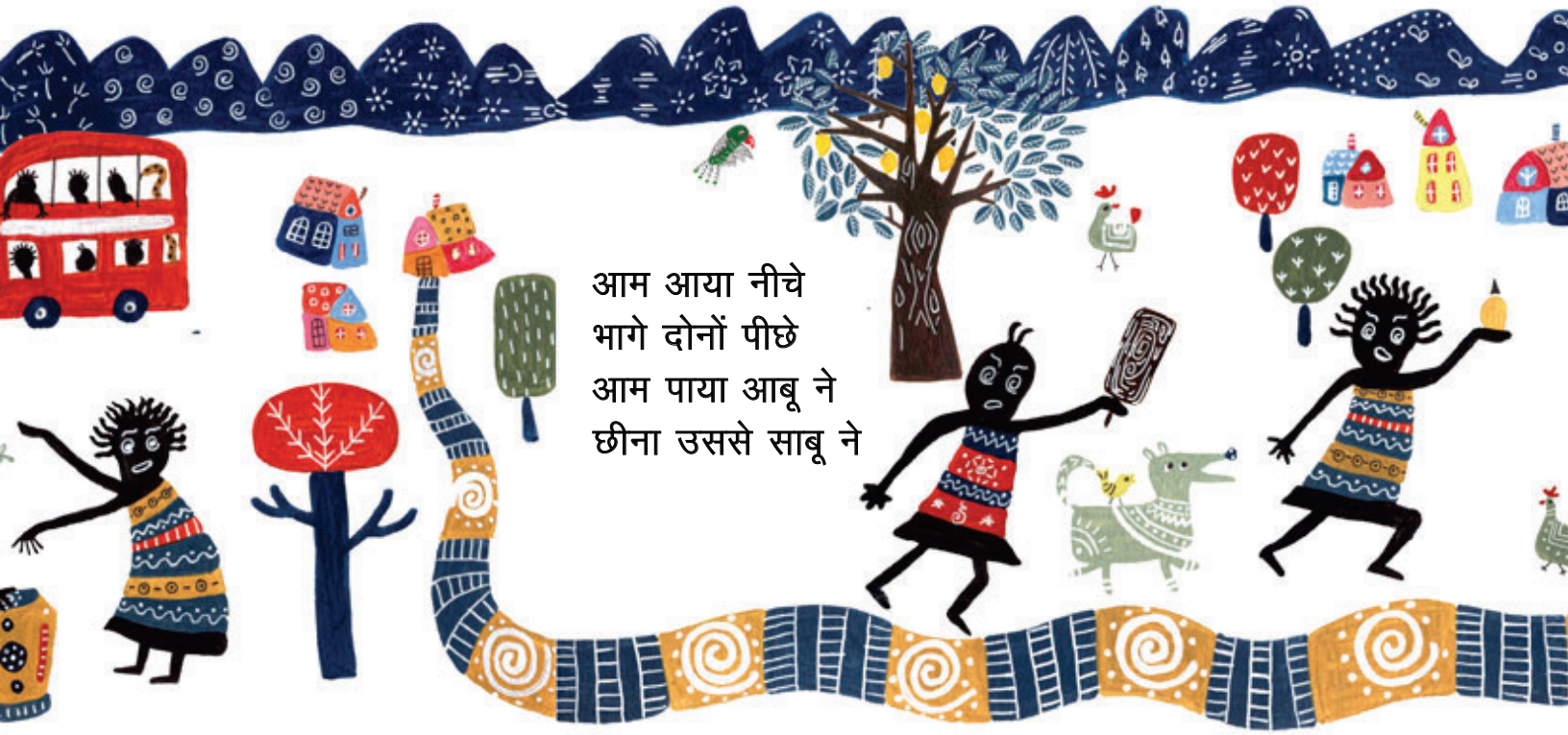

आम आया नीचे
भागे दोनों पीछे
आम पाया आबू ने
छीना उससे साबू ने

# आबू-साबू

श्याम सुशील
चित्र: अमृता

लेकर आम भागा
हँसता हुआ कागा
आबू-साबू रोए
रोए से क्या होए!

# बर्डवॉचिंग

संकेत राउत और जिज्ञासा पटेल
फोटो: दीपाली शुक्ला

पंछी और उनकी चहचहाहट हमारे जीवन का एक हिस्सा है। अमूमन हम सभी रोज़ाना कई पंछियों को देखते हैं। लेकिन अधिकांश लोगों को तोता, मैना और कौए जैसे कुछ इने-गिने पंछियों के अलावा बहुत कम पंछियों के नाम पता होते हैं।

हमने लगभग देशभर घूमकर, जंगलों में रहकर बर्ड सर्वे यानी कि पक्षियों का निरीक्षण किया है – कहाँ, किस किस्म के और कितने पक्षी हैं इसका पता करने में मदद की है। और क्या पता अगर बर्डवॉचिंग तुम्हें पसन्द आ जाए तो तुम और हम भी कभी किसी जंगल में रूबरू हो जाएँ।

भारत में तुम चाहे जहाँ भी हो, तुम्हारे इर्द गिर्द कम से कम पचास तरह के पंछी आसानी से रहते हैं। तो चलो हम इनसे थोड़ी जान-पहचान करने की कोशिश करते हैं। इन पन्नों में कई पंछियों के फोटो दिए गए हैं। क्या तुमने इन्हें कहीं देखा है? क्या तुम इन सभी पंछियों को देखना चाहोगे?

## अपने घर से बर्डवॉचिंग

बर्डवॉचिंग की शुरुआत तुम अपने घर से ही कर सकते हो। शुरू में पक्षियों से जान-पहचान करने में थोड़ा समय लग सकता है, लेकिन मज़ा भी बहुत आता है।

गर्मियों में पीने के पानी की समस्या एक आम बात है। तुमने देखा होगा गर्मी के दिनों में कई लोग प्यासे जीवों के लिए पीने का पानी रखते हैं। सर्दियों में भी पंछियों को पानी की ज़रूरत पड़ती है। तो बारिश के अलावा किसी भी मौसम में अगर तुम भी उनके लिए पानी रखो, तो घर बैठे ही तुम्हें कई तरह के पंछियों को देखने का मौका मिलेगा। बारिश के मौसम में ऐसा करने की ज़रूरत नहीं पड़ती क्योंकि पक्षियों को खाना-पीना हर जगह मिल जाता है।

अपनी खिड़की, बाल्कनी या बगीचे में जहाँ भी तुमने पानी का कुंड रखा हो वहाँ से पन्द्रह फिट की दूरी पर बैठकर देखो कि वहाँ कौन-से पंछी आते हैं। पानी को नियमित रूप से बदलते रहना। धैर्य रखना, थोड़ा वक्त लग सकता है – अक्सर नई जगह पर पानी पीने में पंछी हिचकिचाते हैं। पर कुछ ही दिनों में तुम्हें पंछी दिखाई देने लगेंगे। क्या पता तुम्हें वो पंछी भी दिख जाएँ जो तुमने पहले कभी नहीं देखे हों।

पानी ना भी रखो तो पास-पड़ोस में नज़र घुमाकर या आराम से टहलते हुए भी तुम वहाँ मौजूद पंछियों को देख सकते हो।

बर्डवॉचिंग के समय अपनी डायरी साथ में रखना मत भूलना। उसमें तारीख और समय के साथ नोट करते जाना कि तुमने कौन-कौन से पंछी देखे। पानी पीने के अलावा पंछी ने क्या किया? क्या किसी एक किस्म के पंछी के आने पर दूसरे पंछी वहाँ से रफूचक्कर हो जाते हैं? कौन-से अकेले दिखे, कौन-से जोड़ी में और कौन-से कई साथियों के साथ दिखे?

ओ...हो! क्या तुम घबरा गए कि तुम तो सिर्फ कुछ पंछियों को जानते हो.... परेशान मत हो, इन पन्नों में हमने अमूमन दिखाई देने वाले कुछ पंछियों की तस्वीरें उनके हिन्दी और अंग्रेज़ी नामों के साथ दी हैं। इससे तुम्हें मदद मिलेगी। अगर तुम्हें कोई ऐसा पंछी दिखे जो यहाँ पर तुम्हें नज़र नहीं आ रहा है तो उसके आकार (गौरैया, मैना या कौआ के आसपास) और रंग, चोंच का आकार (लम्बी या छोटी, पतली या मोटी, नुकीली या नहीं, सीधी या घुमावदार) और रंग, पैर का रंग हमें लिख भेजना। उस पंछी को पहचानने में हम तुम्हारी मदद ज़रूर करेंगे।

अपनी डायरी के पन्नों की फोटोकॉपी या फिर फोटो हमें ज़रूर भेजना। तुमने जो पंछी देखे, उनके चित्र बनाकर या उन पर कोई कविता लिखकर भी भेज सकते हो। तुम्हारे जवाब का हमें इन्तज़ार रहेगा। पहले दस जवाबों को हम एक किताब भेजेंगे।

तो दोस्त, अगली बार तक हैपी बर्डवॉचिंग!

1. मादा शिकरा Shikra (female)

2. नर गौरैया House sparrow (male)

3. मोर Peacock

4. गुलदुम बुलबुल Red-vented bulbul

5. छोटा बसन्ता Coppersmith barbet

6. सात भाई Jungle babbler

7. लैबार तोता Rose-ringed parakeet

8. हरेल Green bee-eater

9. मुनिया Indian silverbills

10. बैंगनी शकरखोरा Purple Sunbird

11. महालत Rufous treepie

12. सामान्य कबूतर Rock pigeon

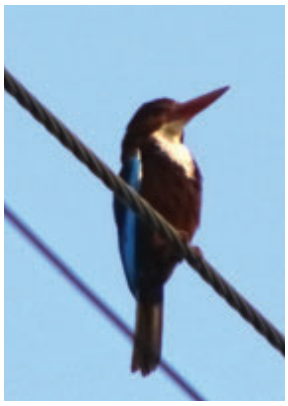

13. सफेद कण्ठ किलकिला White-throated kingfisher

14. नर दयाल Oriental magpie robin (male)

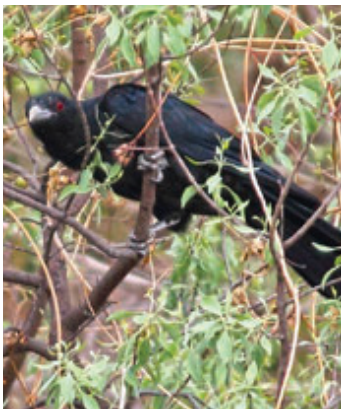

15. नर कोयल Asian koel (male)

16. मादा कोयल Asian koel (female)

17. चित्तीदार चुगद Spotted owlet

18. नर बया Baya weaver (male)

19. स्लेटी धनेष Grey hornbill

20. छोटी फाख्ता Laughing Dove

21. देसी मैना Indian myna

22. भूरा बगुला Indian pond heron

23. कोतवाल Black drongo

24. भारद्वाज Greater coucal

25. देसी कौआ House crow

अन्तिम भाग

# बोरेवाला

मूल तेलुगू कहानी: जयश्री कलाथिल
चित्रांकन: राखी पेशवानी
अनुवाद: शशि सबलोक
प्रकाशक: एकलव्य

अब तक तुमने पढ़ा:

अनु की गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो गई हैं। चार महीने पहले ही उसकी सजिचेची की मौत हो जाती है। तब से अम्मा उदास रहने लगती हैं और अच्चन भी घर में कम ही दिखाई देते हैं। पहले तो अनु फटी-पुरानी बोरियों के थेगड़ों को सिलकर पहनने वाले चाकप्रान्दन से डरती है। पर धीरे-धीरे अनु को चाकप्रान्दन से बातें करना अच्छा लगने लगता है। फिर एक दिन रघु मामन चाकप्रान्दन को इलाज के लिए कुतिरवट्टम ले जाने की बात करते हैं। अनु को कुछ समझ नहीं आता। वो सोचती है शायद चाकप्रान्दन को इलाज की ज़रूरत है। पर माँ तो इलाज से ठीक होती नज़र नहीं आतीं। काश कोई मुझे इस सबके बारे में समझाता, मुझसे बात करता...

अब आगे...

अगले दिन जब वल्यअम्मा मेरे बालों में तेल लगा रही थीं मैंने बाहर शोर सुना। मैं उनके हाथों के बीच से खिसककर बाहर भाग गई। पोस्ट ऑफिस के सामने भीड़ लगी थी। मैंने अच्चन की आवाज़ सुनी। वो मुझे वापिस बुलाने के लिए चिल्ला रहे थे। पर उसे अनसुना कर मैं भाग गई।

चाकप्रान्दन भीड़ से घिरा था। उसके हाथ में एक छड़ी थी जिसे वो चारों तरफ घुमा रहा था। बीएएस के आदमी उसे पकड़ने की कोशिश में थे। वहाँ शोर मचा हुआ था। सभी लोग चीख-चिल्ला रहे थे, "पकड़ो उसे... पकड़ो उसे...।" कोई बोला, "उसकी छड़ी से बचके रहना। "छड़ी छीन लो उससे।" चाकप्रान्दन गुर्रा रहा था और चीख रहा था। छड़ी को उसने दूनी रफ्तार से चारों ओर इस तरह घुमाया कि कोई नज़दीक भी आए तो उसका सिर फूट जाए।

तभी पीछे से चाकप्रान्दन को धक्का लगा और वो गिर गया। अचानक हलचल बढ़ गई। दो-तीन आदमी उस पर टूट पड़े और ज़मीन पर गिराकर उसे दबोच लिया। रघु मामन ने उसके हाथ उसकी पीठ के पीछे खींचे और किसी ने उन्हें रस्सी से बाँध दिया। फिर उसे खड़ा किया।

मुझसे यह सब सहन नहीं हो रहा था। मैं रघु मामन की ओर दौड़ी और उनके बाँह खींचती हुई चिल्लाई, "उसे छोड़ दो! जाने दो उसे! तुम उसे तकलीफ पहुँचा रहे हो। वो तुम्हारे साथ नहीं जाना चाहता।" रघु मामन ने मुझे झटक दिया और चिल्लाकर कहा कि मैं घर चली जाऊँ। उन्होंने चाकप्रान्दन को उठाया और जीप में बैठा दिया। मैं देर तक उसकी चीखें सुनती रही। मैं जीप के पीछे भागी। "छोड़ दो उसे! छोड़ दो! उसे परेशान मत करो! जाने दो उसे!" मैं चिल्लाती रही।

अचानक किसी ने मुझे उठा लिया। मैं लातें मार रही थी, नोंच रही थी। जीप नायाड़िपारा की पहाड़ियों के पीछे गुम होती जा रही थी। और मैं कुछ नहीं कर पाई। मैं चीखती-चिल्लाती रही जब तक कि मेरा गला दुखने नहीं लगा। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि अच्चन या कोई और क्या कहेंगे, क्या सोचेंगे। मैं नहीं चाहती थी कि वो चाकप्रान्दन को ले जाएँ। रोते-रोते मेरी हिचकियाँ बँध गईं। मैं जितना लड़ सकती थी लड़ी। अच्चन मुझे उठाए घर की ओर चलते रहे।

मुझे नहीं पता उसके बाद क्या हुआ। बीच में लगा जैसे मेरा शरीर जल रहा था। मुझे तेज़ प्यास भी लगी। ऐसा लग रहा था जैसे मेरे पूरे शरीर पर तिलचिट्टे चल रहे हों। फिर सजिचेची दिखी। वो मेरे पाँव के नाखूनों पर चमकीली नीली नेल पॉलिश लगा रही थी। नेल पॉलिश लगाने के बाद उसने फूँक मारकर उसे सुखाने की कोशिश की। मैंने उसके झुके हुए सिर को देखा। उसके बाल इतने काले थे कि नीले जैसे लग रहे थे।

हमने छुपनछुपाई खेली। मुझे पता था कि वो हमारी पड़ोसन माधवीअम्मा के पीछे वाले आँगन की बड़ी-बड़ी झाड़ियों में छिप जाएगी। मैंने उसे बहुत ढूँढ़ा पर वो नहीं मिली। जब मेरी आँख खुली तो मैं उसका नाम

लेकर ज़ोर-ज़ोर से चीख रही थी। लगा कमरे में बहुत सारे लोग हैं, पर वो कहीं नज़र नहीं आई। वो चली गई थी। पर तिलचिट्टे फिर से आ गए थे।

मैं फिर से जगी तो अम्मा मेरे पास लेटी हुई थीं। उन्होंने मुझे गले लगाया और कहा कि मैंने सब को डरा दिया था। पिछले पाँच दिनों से मुझे तेज़ बुखार था और मैं लगातार नींद के अन्दर-बाहर हो रही थी। अच्चन ने मुझे सूप पिलाने की कोशिश की। शाम को डॉक्टर प्रभाकरन मुझे देखने आए। उन्होंने भी बताया कि घर में सब लोग कितना घबरा गए थे।

उस रात अम्मा मेरे साथ सोईं। अच्चन आए और हमारे बिस्तर पर बैठ गए। उनके हाथ में एक पार्सल था।

"इंजीमिट्टाई..." मैं मुस्कराई।

अच्चन के चेहरे पर एक बड़ी-सी मुस्कराहट आई, "हाँ। कितने दिनों से मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं लाया था। तो सोचा आज इसकी भरपाई कर ली जाए।"

मैं एक बार में तीन इंजीमिट्टाई खा गई। मैं तो इसका स्वाद तक भूल गई थी – मीठी, तीखी, तेज़...सब साथ-साथ। किसी ने कुछ नहीं कहा और मैं फिर सो गई।

अगली सुबह उठकर मैं सीधा रसोई में गई। अम्मा पहले ही जाग गई थीं और नाश्ता बना रही थीं। कितने अर्से बाद मैं उन्हें इस तरह देख रही थी। वो नहा चुकी थीं। उनके बालों से पानी टपक रहा था। वो राधा साबुन की खुशबू से महक रही थीं। बाद में उन्होंने मुझे गर्म पानी से नहलाया। मुझे लगा जैसे मैं नन्ही बच्ची बन गई हूँ।

नहाने के बाद मैं बाहर आई। बगीचा सुन्दर लग रहा था। सारे पौधे तरोताज़ा थे। मैं धीरे-धीरे नीचे उतरी और मैंने पोस्ट ऑफिस की तरफ देखा। वो कोना खाली था। चाकप्रान्दन वहाँ नहीं था।

तभी अम्मा पीछे से आईं और मेरे कन्धों पर अपने हाथ रख दिए। "उसे क्या हुआ?" मैंने पूछा। "वे उसे कुतिरवट्टम ले गए थे, पर..." अम्मा कुछ झिझकीं, "रघु ने बताया कि तीसरे ही दिन वो वहाँ से भाग गया। वो यहाँ भी नहीं आया। कहीं और चला गया होगा।"

मेरी आँखें भर आईं। "सब मेरी गलती है।" मैंने कहा। "मुझे उसे बता देना चाहिए था कि ये लोग उसे ले जाने की योजना बना रहे हैं। वो तभी भाग जाता। इतना परेशान किए जाने से पहले ही।"

अम्मा ने मुझे अपनी ओर घुमा लिया और अपने हाथों में मेरा चेहरा थाम लिया। "यह तुम्हारी गलती नहीं है।" उन्होंने कहा। "तुम नहीं जानती थी कि करना क्या है। और तुम्हारे पास कोई भी तो नहीं था जो तुम्हें समझा पाता। मैं भी नहीं थी तुम्हारे पास।" उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और हम वापस चलकर घर के बरामदे में बैठ गए। "कभी-कभी हम में से किसी को नहीं पता होता कि क्या करना ठीक होगा।" वो चुप हो गईं। मैंने एक मैना की आवाज़ सुनी और सिर उठाकर ढूँढ़ने लगी कि वो पेड़ पर कहाँ बैठी है। "वो ठीक हो जाएगा।" अम्मा ने कहा। "जब वो लौट आए तो तुम उसे खाना दे सकती हो।" कहते हुए वह खड़ी हो गईं। "आओ अब थोड़ी देर के लिए लेट जाओ। मैं तुम्हें दूध देती हूँ।"

मैं उनकी बात पर यकीन करना चाहती थी, पर जानती थी कि वो अब कभी नहीं आएगा। वो बहुत डरा हुआ होगा। क्या पता अम्मा की तरह एक दिन वो भी ठीक हो जाए। मैंने कल्पना की कि चाकप्रान्दन एक छोटे-से लड़के की उँगली पकड़े सड़क पर जा रहा है। फिर कल्पना की कि वो एक कोने में बोरी के थेगड़े वाले कपड़े पहने बैठा है। मैंने बिस्तर पर बैठकर अपनी कॉपी खोल ली। इन गर्मियों में मेरी जादुई लड़की डेज़ी ने कुछ खास नहीं किया था। मैंने सोचा कि उसे घूमने भेज देती हूँ जहाँ वो एक दाढ़ी वाले भले आदमी से मिलेगी और दोनों मिलकर कमाल के कारनामे करेंगे।

मैंने अभी दो ही पन्ने लिखे होंगे कि रशीदा की आवाज़ सुनाई दी। वो अम्मा से मेरी तबीयत का हाल पूछ रही थी। मैंने अपनी कॉपी बन्द की और उससे मिलने के लिए बाहर आ गई।

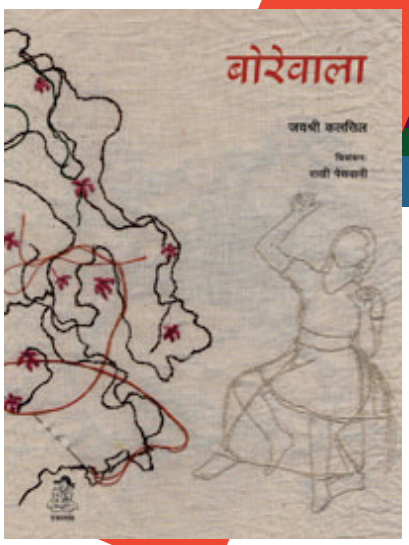


# डिफरेंट टेल्स

कहानियों का मज़ा तभी है जब पाठक खुद को कहानी के पात्रों से जोड़ सकें। पात्र और परिवेश में खुद को देख सकें। अपने आसपास ही नज़र दौड़ाएँ तो हमें रहन-सहन, खानपान में बहुत विविधता नज़र आएगी। लेकिन इन विविध परिस्थितियों में रह रहे बच्चे और उनका जीवन किताबों में नज़र नहीं आता है। बच्चों के लिए लिखी गई अधिकांश कहानियों में ना तो ये बच्चे खुद को देख पाते हैं और ना ही उनके पात्रों से जुड़ पाते हैं। साथ ही अक्सर ये कहानियाँ यह दिखाना भूल जाती हैं कि बच्चों की ज़िन्दगी सिर्फ पढ़ाई और खेल तक सीमित नहीं है। उनकी ज़िन्दगी भी तमाम तरह के अनुभवों से भरी हुई है। उनके अन्दर सिर्फ खुशी, गुस्सा और दुःख नहीं होता बल्कि बड़ों की तरह उनमें भी कई तरह की भावनाएँ होती हैं। 'डिफरेंट टेल्स' बाल साहित्य में इन्हीं विषयों को उजागर करने का एक प्रयास है।

डिफरेंट टेल्स क्षेत्रीय भाषा की ऐसी कहानियाँ ढूँढ़-ढूँढ़कर निकालता है, जो ज़िन्दगी की बातें करती हैं। कई सारी कहानियाँ लेखकों के अपने बचपन का बयान करते हुए बड़े होने के अलग-अलग ढंगों को प्रस्तुत करती हैं, प्राय: एक प्रतिकूल दुनिया में जहाँ वे हमजोलियों, पालकों और अन्य वयस्कों से नए सम्बन्ध बनाते हैं। ज़ायकेदार व्यंजनों, छोटे-छोटे जुगाड़ू खेलों, स्कूल के अनापेक्षित सबकों और दिलदार दोस्तियों के माध्यम से ये कहानियाँ हमें एक दिलकश सफर पर ले जाती हैं।

बोरेवाला, किताब अन्वेषी रिसर्च सेंटर ने डिफरेंट टेल्स के अन्तर्गत तैयार की है। और एकलव्य ने इसे हिन्दी में छापा है। इस सेट में अभी कुल आठ किताबें हैं। इनमें से एक किताब सिर का सालन तुमने चकमक के जनवरी, 2020 के अंक में पढ़ी होगी। चकमक में भी हम समाज के अलग-अलग तबकों के जीवन को दर्शाती कई कहानियाँ छापते हैं। पिछले कुछ अंकों में छपी कोकड़ाल, मंजूर, बारिश और इस अंक की नज़रिया कहानी ऐसी ही कुछ कहानियों में से हैं। तुम्हें इन कहानियों को पढ़कर क्या लगा, हमें ज़रूर लिखना।

इन किताबों को तुम पिटारा कार्ट से मँगवा सकते हो। http://www.pitarakart.in

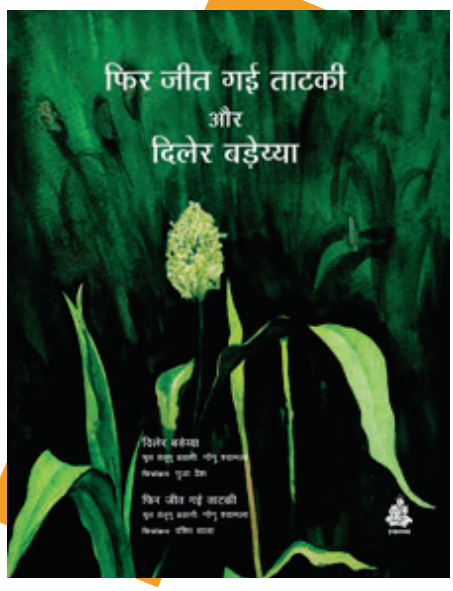


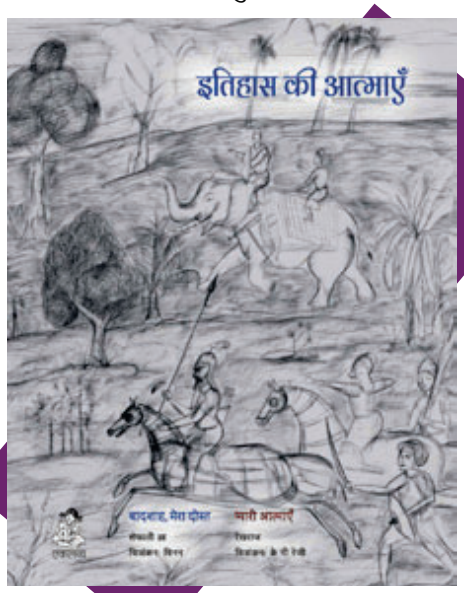


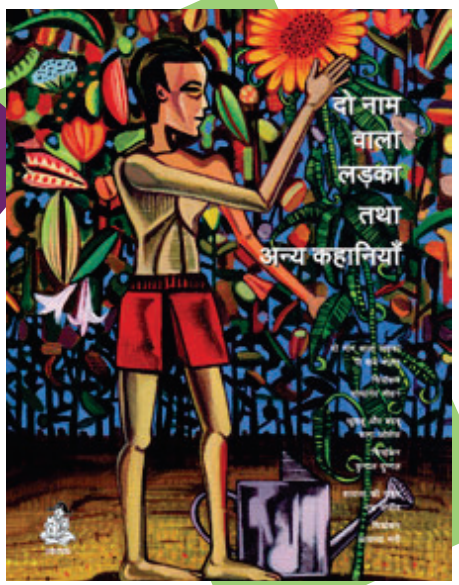

मैं जब हुआ
मेरी माँ को लगा
कि दुनिया में एक आला गड़रिया हुआ
मेरी माँ को लगा

उनको होता पता
कोई देता बता
कि मैं एक दिन
एक बकरी की पूँछ को थामकर
उसकी गोदावरी को सलाम कर
पीढ़ियों से रुका इल्म आज़ाद कर
जो हुआ अब तलक उसको ही याद कर
चला जाऊँगा....उसको था न पता...

एक कायम रहे सिलसिले के लिए
मेरी जाति है क्या
पूछता है स्कूल दाखिले के लिए।

माँ ने पूछा मुझे
दाखिले के समय
माँ ने पूछा मुझे
वो जो लिखता है चॉक से स्कूल में
तू क्या टीचर बन सकेगा रे स्कूल में?
या कि लेखक बनेगा लिखेगा किताब
काग़ज़-कलम से करेगा हिसाब।

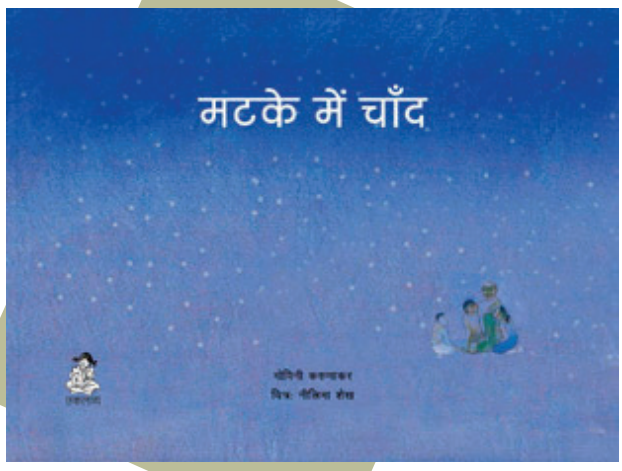

'माँ' किताब में दी गई कविता का एक अंश
कांचा इलैया शेपर्ड
अँग्रेज़ी से अनुवाद: सुशील शुक्ल

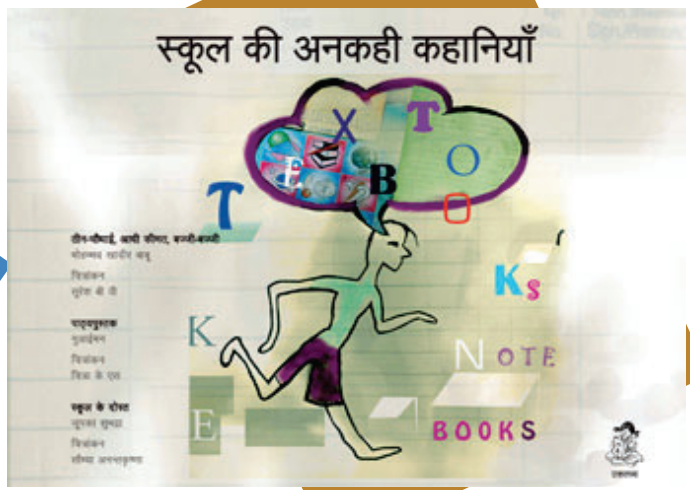

# अमीबा भूलभुलैया में रास्ता ढूँढ़ सकते हैं

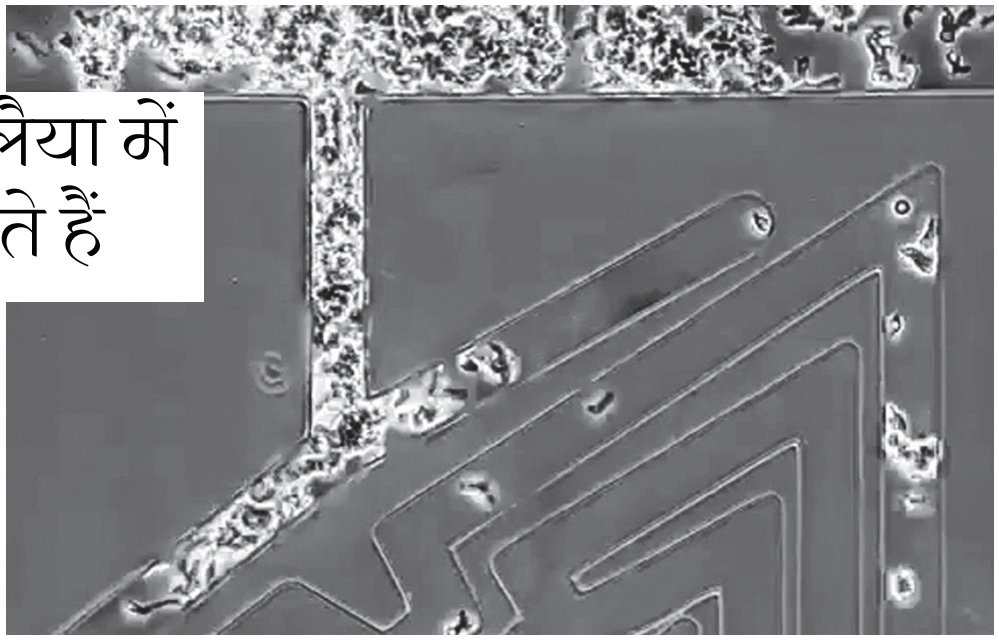

**भूलभुलैया** में जाना और खुद से बाहर निकलना मुश्किल भी होता है और रोचक भी। देखा गया है कि चूहे भी भूलभुलैया से बाहर निकल आते हैं। एक नए अध्ययन में यह मज़ेदार बात पता चली है कि चूहे ही नहीं, अमीबा जैसे एक-कोशिकीय जीव और एक इकलौती कैंसर कोशिका भी भूलभुलैया से बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ़ लेती है।

प्रत्येक कोशिका चाहे वह कैंसर कोशिका हो, त्वचा कोशिका हो, या बैक्टीरिया सरीखे एक-कोशिकीय जीव हों, आम तौर पर ये जानते हैं कि उन्हें किस दिशा में आगे बढ़ना है। वे अपने पर्यावरण में मौजूद आकर्षक रसायनों को पहचानकर उनकी दिशा में आगे बढ़ते हैं। इसे कीमोटैक्सिस (रसायन-संचालित गति) कहते हैं। कोशिकाओं का यह बुनियादी दिशा ज्ञान लगभग आधे मिलीमीटर तक की छोटी दूरी के लिए तो बढ़िया काम करता है। लेकिन मुश्किल और लम्बा रास्ता तय करने के लिए कोशिकाएँ सिर्फ रासायनिक संकेतों के भरोसे नहीं रह सकतीं। तो फिर ये कोशिकाएँ लम्बा रास्ता कैसे तय करती हैं?

यह पता लगाने के लिए शोधकर्ताओं ने एक अध्ययन किया। यह अध्ययन लम्बा फासला तय करने वाली दो तरह की कोशिकाओं पर आधारित था – अमीबा (डिक्टियोस्टेलियम डिसोइडम) और चूहों के अग्नाशय की कैंसर कोशिका। शोधकर्ताओं ने विभिन्न सूक्ष्म भूलभुलैया तैयार कीं। इनमें पर्याप्त मोड़ और रास्तों के विकल्प थे। इन भूलभुलैया के आखिरी छोर पर आकर्षक रसायन भरे गए थे। और ऐसे ही रसायन भूलभुलैया के अन्दर भी भरे गए थे ताकि कोशिकाएँ अपना रासायनिक रास्ता (चिन्ह) बना सकें। ये भूलभुलैया लगभग वैसी ही जटिल थीं जैसी ज़मीन के अन्दर की सुरंगें अथवा रक्त नलिकाओं का जाल होता है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि दोनों तरह की कोशिकाएँ 0.85 मिलीमीटर लम्बी विभिन्न भूलभुलैया से सफलतापूर्वक बाहर निकल आईं। सबसे लम्बी भूलभुलैया को सिर्फ अमीबा सुलझा पाए। कैंसर कोशिकाएँ बहुत धीमी गति से आगे बढ़ती हैं। इसलिए शोधकर्ताओं का विचार है कि हो सकता है कि इतनी लम्बी भूलभुलैया को पार करने के दौरान वे बीच में ही नष्ट हो गई होंगी।

इसके अलावा, भूलभुलैया में अमीबा की पहली टोली रसायनों को प्रोसेस कर भूलभुलैया के बन्द सिरों (जिनमें सीमित मात्रा में आकर्षक रसायन था) और बाहर निकलने के खुले रास्तों के बीच अन्तर कर पाईं। लेकिन इनके पीछे आने वाली कोशिकाओं की टोली यह अन्तर नहीं कर पाई। प्रकृति में, आम तौर पर आगे वाली कोशिकाएँ अपनी पीछे चलने वाली कोशिकाओं को रास्ते का अनुसरण करने के संकेत देती हैं। लेकिन प्रयोग में वैज्ञानिकों ने आगे वाली कोशिकाओं में बदलाव कर इन संकेतों को बाधित कर दिया था। इसलिए जब आगे वाली कोशिकाएँ रसायनों को संसाधित कर आगे बढ़ीं (यानी रास्ते से रसायन हटा दिए गए), तो पीछे आने वाली कोशिकाएँ रास्ता भटक गईं।

# तुम भी जानो

## पेड़ के ऊपर पेड़

इटली के पीडमोंट की ग्राना और कसोरज़ो नाम की जगहों के बीच एक अनोखा पेड़ है। इतालवी भाषा में इसे 'खुशियों का दोहरा पेड़' भी कहते हैं। दोहरा पेड़ इसलिए कि यहाँ शहतूत के एक सूखे पेड़ के ऊपर चेरी का एक भरापूरा पेड़ उगा हुआ है। विशेषज्ञों के हिसाब से कभी किसी चिड़िया ने शहतूत के पेड़ के ऊपर चेरी का बीज गिरा दिया होगा। जिस कारण यहाँ चेरी का पेड़ उग गया होगा। वैसे एक पेड़ के ऊपर दूसरे पेड़ का उगना बहुत नई बात नहीं है लेकिन आम तौर पर ऐसे पेड़ ज़्यादा समय तक ज़िन्दा नहीं रह पाते हैं। पर ये पेड़ फल देने वाले एक बड़े पेड़ में तब्दील हो चुका है और काफी समय से हरा-भरा है।

चकमक

## बदलते रंगों वाले तालाब

इंडोनेशिया के केलिमुतु नेशनल पार्क में खूबसूरत नज़ारों के साथ-साथ तीन अनोखे तालाब भी देखने को मिलते हैं। ये तीनों तालाब केलिमुतु नाम से ही जाने जाते हैं। पर इनको अनोखा इनका नाम नहीं बल्कि इनके रंग बनाते हैं। इन तीनों तालाब के रंग अलग-अलग तो हैं ही लेकिन पूरे साल इनके रंग बदलते भी रहते हैं। यानी कि कभी इन तालाबों का रंग नीला, हरा और काला होता है तो कभी सफेद, लाल और नीला। यह तालाब कब अपना रंग बदलते हैं किसी को पता नहीं। लेकिन वैज्ञानिकों की मानें तो इनके रंग बदलने का कारण वहाँ स्थित ज्वालामुखी है। तालाब में मौजूद खनिज ज्वालामुखी के अन्दर चलने वाली गतिविधियों से निकलने वाली गैस के साथ रासायनिक अभिक्रिया करते हैं। इसी वजह से तालाब का रंग बदलता रहता है।

चकमक

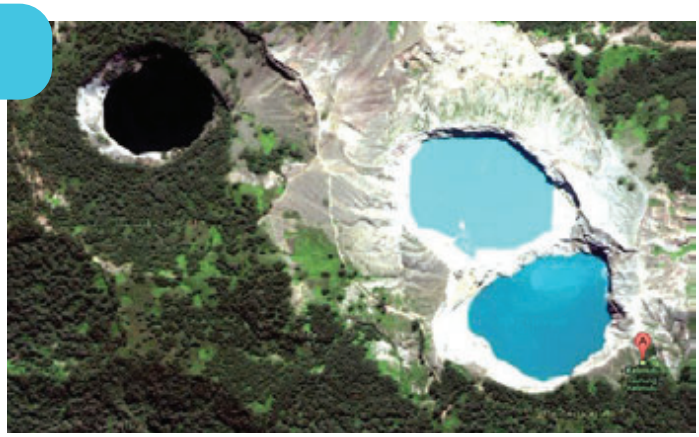

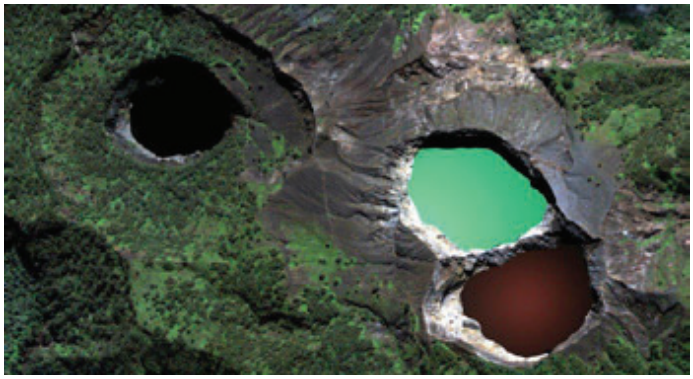

# सतरंगी बारिश

चित्र व कहानी:
यज्ञा,
पाँच साल,
नोएडा, उत्तर प्रदेश

एक बार की बात है। एक प्राचीन राज्य हुआ करता था। उसमें बहुत-से लोग थे। और बहुत-सी परियाँ भी। उस राज्य में सतरंगी बारिश वाला एक तूफान आया। और बादल गहरे नीले रंग के थे। जब बादल फटे तो सतरंगी बारिश हुई और सतरंगी बिजली चमकी। और उनकी इच्छाओं में फिर परियों की झिलमिलाहटें थीं। बस खतम हुई बात।

# बादल ने सोचा

तान्या पटेल
सातवीं, राजकीय प्राथमिक शाला
सागर, मध्य प्रदेश

एक दिन बादल ने सोचा अब मैं कभी नहीं बरसूँगा। बरसता हूँ तो लोग मेरी बुराई करते हैं। नहीं बरसता हूँ तो भी बुराई करते हैं। आज से बरसना बिलकुल बन्द। जब बादल ने बरसना बन्द किया तो सारे पेड़-पौधे सूखने लगे। पेड़ों को सूखते देख किसान भगवान की पूजा करने लगा। तब पानी गिरा और ऐसा गिरा कि किसान के खेत के पेड़ पूरे जड़ समेत निकलकर बह गए। तब सबने बादल की बुराई करना बन्द कर दिया।

चित्र: प्रियांशु तिवारी,
ग्राम गोंठी,
परिवर्तन सेंटर,
सिवान, बिहार

# मेरा पन्ना

## फुलझड़ी

अपूर्वा गजपाल
छठवीं, कसारीडीह
दुर्ग, छत्तीसगढ़

एक बार की बात है। दिवाली के समय मेरे बड़े भैया बहुत सारे पटाखे खरीदकर लाए। चूँकि मैं छोटी थी इसलिए उसने मुझे सिर्फ फुलझड़ी दी और बड़े पटाखे खुद फोड़ने लगे। छोटी हो बोलकर उसने मुझे बड़े पटाखे नहीं दिए। तो मैंने क्या किया कि एक बड़ा पटाखा चुपके से लेकर उसको चूल्हे में फोड़ने के लिए डाल दिया। चूल्हे में डालते ही ज़ोर का धमाका हुआ। और खाना बनाने का बरतन जो चूल्हे में चढ़ा था नीचे गिर गया। पूरा खाना नीचे फैल गया। इसके बाद माँ और भैया ने मेरी खूब कुटाई की। फिर उन्होंने मुझे समझाया कि बड़े पटाखे छोटे बच्चों के लिए खतरनाक होते हैं। आप लोग मेरे जैसी गलती मत करना।

चित्र: ताप्ती कड़वे, तीसरी, आनन्द निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

चित्र: विहान, दूसरी, बेंगलुरु, कर्नाटका

# इतवार का दिन

स्वप्निल नेवारे व समीर लोणगाडगे
सातवीं, ज़िला परिषद उच्च प्राथमिक स्कूल, गोवारी, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

इतवार का दिन था। घर में मन नहीं लग रहा था। तो हम सब दोस्त तैरने के लिए निकल पड़े। कुछ घण्टे नदी पर बिताने के बाद हम सबने पास वाली इमली के पेड़ पर हमला कर दिया। बोरा भरकर इमली इकठ्ठा की हमने। पर अब ले कैसे जाएँ? वैसे ही जमा करके पेड़ के नीचे रख दी और उसे साग के पत्ते से ढँक दिया। नजिक के खेत में जो झोपड़ी थी वहाँ अगर कोई बोरा मिल जाए तो काम बन जाए, ये सोचकर हम खेत की ओर निकल पड़े।

खेत में ताज़ी-ताज़ी हरी मिर्च, टमाटर और बैंगन देखकर हमारे मुँह में पानी भर आया। जवारी का हुरडा और बैंगन का भरता खाने की बड़ी इच्छा हुई। पर हमारे पास में न तो तेल था, न नमक, न कोई बरतन। झोपड़ी में जाकर देखा तो गण्या मस्त सोया हुआ था। उसके पास ही नमक और भोजन का डिब्बा था। हमारा गेम तो बन गया। हमने गण्या को उठाया। बोरे के बदले इमली और हुरडा के बदले मैगी का पैकेट देने की बात कही। गण्या झट-से मान गया।

हम सब काम पर लग गए। बैंगन, टमाटर, मिर्च तोड़ीं। सबने मिलकर हुरडा भूना। सभी सब्जियाँ भूनीं। सब्ज़ियों को साफ पत्थर पर पीसकर भरता बनाया। तेल तो नहीं था, सिर्फ नमक लगाकर पलास के पत्तों पर बाँटकर सब ने भरपेट खाया। भूख जमकर लगी थी। इतना सारा काम जो किया था। गाँव से चलकर नदी तट आए, इमलियाँ तोड़ीं, इकठ्ठा कीं, पत्तों से ढ़ाँकीं, खेत आकर हुरडा-भरता पकाया। चार बज गए थे। भूख कैसे न लगती?

पेटभर खाने के बाद थोड़ी देर वहीं लुढ़क गए। गण्या के दादाजी के आने से पहले हमको निकलना था। गण्या इमली माँग रहा था। हमने बोरा उठाया और पेड़ की तरफ चल पड़े। बोरा भरकर फिर से खेत की तरफ चल पड़े। गण्या को कहा चाहे जितनी इमली ले ले। गण्या ने टोकरी भर ली। हम बोरा उठाकर गाँव की तरफ चल पड़े। इतने में गण्या के दादाजी आ गए। उन्होंने टोकरी में इमली देखी। एक बार टोकरी की तरफ और एक बार बोरे की तरफ देखा। उन्हें लगा शायद गण्या भी हमारे साथ इमली तोड़ने गया था। कुछ भी न कहते हुए, इमली मुँह में लेकर वे खेत देखने निकल पड़े।

गण्या हमारे साथ निकल पड़ा। रास्ते में वो मैगी की माँग को लेकर बहुत चिन्तित था। बार-बार याद दिला रहा था। गाँव पहुँचते-पहुँचते हमको छह बज गए। माँ गुस्सा कर रही थीं। फिर बोरा भर इमलियाँ देखकर मुस्कराईं। इमलियों को तीन हिस्सों में बाँट दिया। गण्या को मैगी के लिए पाँच रुपए दिए और बोरा लौटा दिया।

माँ ने रात को खाने में इमली की चटनी बनायी। मैंने पिताजी को रात में खाना खाते समय सारा किस्सा सुनाया। पिताजी हँसे और बोले, "सँभालकर!"

सफीकूल, बड्स मूरी गेट, निरन्तर संस्था, दिल्ली

# बहुत मज़ा किया

आकांक्षा सिंह
सातवीं, सेंट मैरी पब्लिक स्कूल जन्दाहा
वैशाली, बिहार

एक बार मैं अपने भाइयों व बहनों के साथ पार्क में गई थी। वहाँ मैंने देखा कोई बच्चा खेल रहा था और कोई झूला झूल रहा था। तभी एक बच्चा झूले से गिर गया तो मैंने जल्दी से उसे उठाया। लेकिन वह रोने लगा। फिर मैंने उसे चॉकलेट दी तो वो चुप हो गया। फिर हमने उस दिन बहुत मज़ा किया।

मेरा पन्ना

# माथापच्ची

1. रिदा के इन गिफ्ट्स के बीच एक ग्रीटिंग कार्ड भी है। तुम्हें दिखा क्या?

2. यदि

1 + 4 = 5,

2 + 5 = 12,

3 + 6 = 21,

तो 8 + 11 = ?

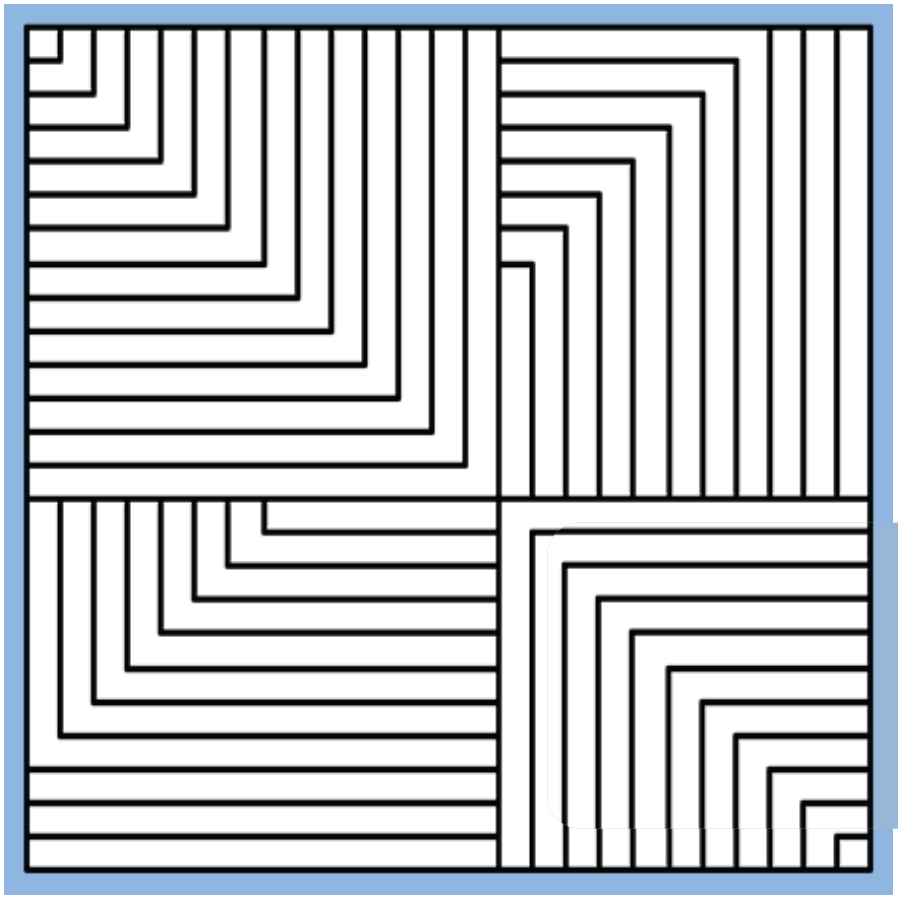

3. एक कमरे में 10 लोग हैं। हरेक व्यक्ति पूरे कमरे को और बाकी सभी लोगों को देख सकता है। कमरे में एक सेब रखा है। एक व्यक्ति को छोड़कर बाकी सभी उस सेब को देख सकते हैं। क्या तुम बता सकते हो वह सेब कहाँ रखा है?

4. इस चित्र में + की एक आकृति छुपी है। क्या तुम उसे ढूँढ़ सकते हो?

5. यह चाबी किस दरवाज़े की है?

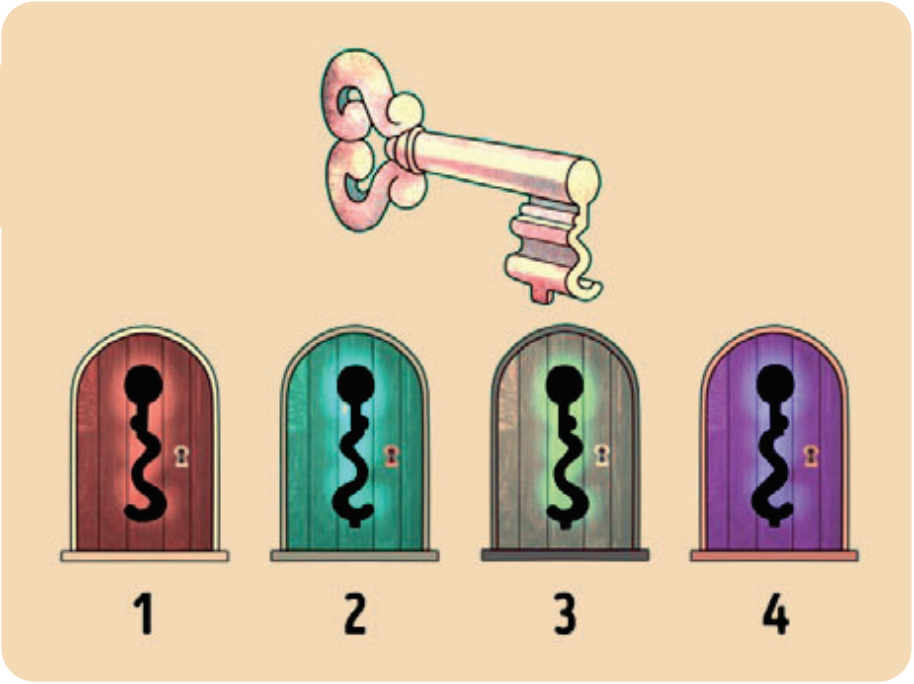




6. अयान और शर्ली पार्टी के लिए गुब्बारे फुला रहे थे। शर्ली बोली, "यह ठीक बात नहीं है। तुम्हारे पास मुझसे 3 गुने गुब्बारे हैं।" अयान ने शर्ली को 10 गुब्बारे और दे दिए। "तुम्हारे पास अभी भी मुझसे 2 गुना गुब्बारे हैं", शर्ली बोली। अयान को शर्ली को कितने गुब्बारे देने होंगे कि दोनों के पास बराबर-बराबर गुब्बारे हो जाएँ?

7. लाल व नीली रंग की दो कारें हैं। नीली कार 40 किलोमीटर प्रति घण्टा की चाल से चल रही है और लाल कार 60 किलोमीटर प्रति घण्टा की चाल से। दोनों कारें एक ही समय पर चलना शुरू करती हैं फिर भी वे एक-दूसरे को पार करती हैं। यह कैसे हो सकता है?

## फटाफट बताओ

कौन है जो तुम्हारा माल भी लेता है और दाम भी लेता है?

(नाई)

एक कोने में रहकर भी मैं पूरी दुनिया घूम सकता हूँ। बताओ मैं कौन हूँ?

(डाकटिकट)

कौन है जिसके सामने सब कटोरी लेकर खड़े होते हैं?

(पानीपूरी वाला)

वह क्या है जो बिना पैरों के चलता है और वापिस भी नहीं लौटता?

(समय)

एक जज का बेटा वकील है। पर वकील के पिता पुलिस हैं। तो फिर जज कौन है?

(माँ)

गर्मी में खलती है सबको
सर्दी में मन भाती
उससे ही दिन रोशन होता
बोलो क्या कहलाती

(धूप)

मुँह में ठूँसो मेरे लकड़ी
आग का हूँ मैं कुआँ
ज़्यादा हवा ने मेरी साँसें पकड़ीं
बन्द करो तो दूँगा धुआँ

(चूल्हा)

बाहर बाल हैं भीतर पानी, बीच में सुन्दर काया
जिसने पाया बड़े चाव से, तोड़-तोड़कर खाया

(नारियल)

## सुडोकू-35

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 9 | | | 6 | 5 | 1 | |
| | 6 | | 4 | 9 | | 3 | | |
| | 2 | | | | 8 | | | |
| | | | | | 7 | 2 | | 1 |
| 4 | | 1 | | 8 | 2 | 7 | 5 | 9 |
| | 7 | | 3 | | 1 | 6 | 8 | 4 |
| 5 | | | 8 | | | | 2 | 7 |
| | | 3 | | 2 | 9 | | 4 | 5 |
| 2 | 9 | | 5 | 1 | 4 | 8 | | 3 |

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, पीले बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर डब्बे में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

# चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

# माथापच्ची

## जवाब

**1.**

**2.**

इन संख्याओं में यह पैटर्न है:

1 + 1 x 4 = 5

2 + 2 x 5 = 12

3 + 3 x 6 = 21

इसलिए 8 + 8 x 11 = 96

**3.** क्योंकि सेब किसी एक व्यक्ति के सिर पर रखा है।

**4.**

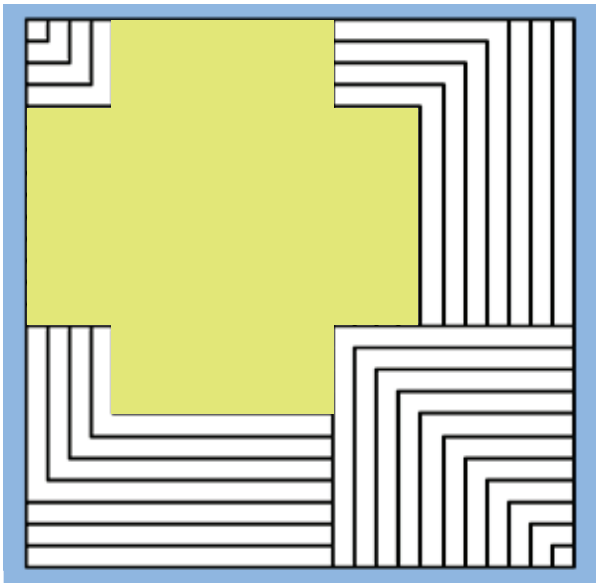

**5.** तीसरे नम्बर के दरवाज़े की।

**6.** क्योंकि दोनों कारें विपरीत दिशा में चल रही थीं।

**7.**

मान लो कि शुरुआत में शर्ली के पास x गुब्बारे थे। चूँकि तब अयान के पास शर्ली से तिगुने गुब्बारे थे। तो अयान के पास 3x गुब्बारे हुए। 10 गुब्बारे शर्ली को देने के बाद अयान के पास शर्ली से दुगुने गुब्बारे थे। यानी कि

2(x+10) = 3x-10

x = 30 तो शुरुआत में शर्ली के पास 30 और अयान के पास 90 गुब्बारे थे। 10 गुब्बारे देने के बाद शर्ली के पास 40 और अयान के पास 80 गुब्बारे थे। तो अयान को शर्ली को 20 गुब्बारे देने होंगे। तब दोनों के पास 60 गुब्बारे होंगे।

### सितम्बर की चित्रपहेली का जवाब

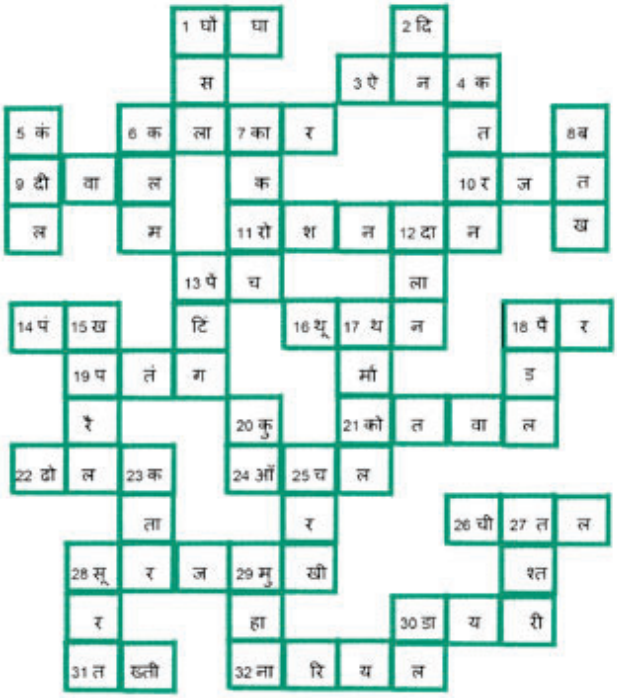


### सुडोकू-34 का जवाब

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 1 | 2 | 6 | 3 | 4 | 8 | 9 | 7 |
| 9 | 3 | 7 | 8 | 1 | 5 | 2 | 6 | 4 |
| 6 | 4 | 8 | 2 | 7 | 9 | 5 | 3 | 1 |
| 8 | 5 | 9 | 4 | 2 | 3 | 1 | 7 | 6 |
| 3 | 7 | 1 | 9 | 5 | 6 | 4 | 8 | 2 |
| 4 | 2 | 6 | 1 | 8 | 7 | 3 | 5 | 9 |
| 2 | 9 | 3 | 5 | 6 | 1 | 7 | 4 | 8 |
| 7 | 8 | 4 | 3 | 9 | 2 | 6 | 1 | 5 |
| 1 | 6 | 5 | 7 | 4 | 8 | 9 | 2 | 3 |

सूअर, गाय और भेड़ अपने घर का रास्ता ढूँढ़ रहे हैं।
क्या तुम उनकी मदद कर सकते हो?

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

भैंस गई जब पानी में,
सपरी खोरी पानी में।

कूदी-उचकी मारी गुपची,
दिन भर लोरी पानी में।

एक नहीं दो-चार खड़ी हैं,
कारी-भूरी पानी में।

गागर फोड़ी बागड़ तोड़ी,
खाई कंदूरी पानी में।

नानी कहतीं एक कहावत,
गई भैंस अब पानी में।

# गई भैंस पानी में

मनोज साहू 'निडर'

चित्र: कनक शशि

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल 462026, म प्र से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन